गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 242
दि. 02.01.2026,
शुक्रवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

विवादों के बीच लोकपाल का कदम पीछे, लग्जरी BMW खरीद का फैसला बदला, टेंडर रद्द कर बचाई साख

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई के लिए गठित देश की सर्वोच्च संस्था लोकपाल आखिरकार अपने ही एक फैसले को लेकर पीछे हटती नजर आई है। सात लग्जरी BMW कारों की खरीद को लेकर उठे तीखे राजनीतिक और सामाजिक विरोध के बाद लोकपाल ने इस विवादित टेंडर को रद्द कर दिया है। सार्वजनिक धन के इस्तेमाल और संस्था की नैतिक जिम्मेदारी को लेकर जिस तरह सवाल उठे, उसके बाद यह फैसला लोकपाल के लिए एक तरह का 'लग्जरी यू-टर्न' माना जा रहा है। अधिकारियों के अनुसार, लोकपाल की पूर्ण पीठ ने इस मुद्दे पर मंथन के बाद 16 दिसंबर 2025 को एक आधिकारिक संशोधन जारी कर टेंडर को निरस्त करने का निर्णय लिया। यह पूरा विवाद 16 अक्तूबर 2025 को शुरू हुआ था, जब लोकपाल ने सात BMW 3 Series 330Li कारों की आपूर्ति के लिए रिक्वेस्ट फॉर प्रपोजल जारी किया। प्रस्ताव के अनुसार, ये सभी लग्जरी कारें लोकपाल के अध्यक्ष और उसके छह सदस्यों के व्यक्तिगत उपयोग के लिए खरीदी जानी थीं। जैसे ही यह जानकारी सार्वजनिक हुई, राजनीतिक गलियारों से लेकर सोशल मीडिया और सिविल सोसाइटी तक में सवाल उठने लगे कि भ्रष्टाचार से लड़ने वाली संस्था को आखिर इतनी महंगी और लग्जरी गाड़ियों की जरूरत क्यों पड़ी। आलोचकों का कहना था कि यह कदम लोकपाल की मूल भावना और उसकी सादगीपूर्ण, निष्पक्ष छवि के बिल्कुल विपरीत है।

विपक्षी दलों ने इस मुद्दे को हाथोंहाथ लिया और केंद्र सरकार पर परोक्ष हमला बोला। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने सोशल मीडिया पर तीखा तंज कसते हुए लोकपाल को "शौकपाल" तक कह दिया, जिससे यह विवाद और गहरा गया। वहीं, पूर्व नौकरशाह अमिताभ कांत ने भी सार्वजनिक मंच से अपील की कि लोकपाल को यह टेंडर रद्द करना चाहिए और अगर वाहन खरीदने ही हैं तो भारत में निर्मित इलेक्ट्रिक गाड़ियों पर विचार किया जाना चाहिए। सिविल सोसाइटी के कई संगठनों और बुद्धिजीवियों ने भी कहा कि जब आम जनता महंगाई और संसाधनों की कमी से जूझ रही है, तब एक संवैधानिक संस्था द्वारा करोड़ों रुपये की लग्जरी कारों की योजना नैतिक रूप से गलत संदेश देती है। टेंडर दस्तावेजों में जिन कारों की मांग की गई थी, वे BMW 330Li M Sport मॉडल थीं, जिनका रंग सफेद और व्हीलबेस लंबा होना तय किया गया था। नई दिल्ली में इन सात कारों की अनुमानित ऑन-रोड कीमत करीब पांच करोड़ रुपये आंकी गई थी। इनका उपयोग लोकपाल के अध्यक्ष, सेवानिवृत्त सुप्रीम कोर्ट जज जस्टिस ए. एम. खानविलकर, और संस्था के छह अन्य सदस्यों के लिए प्रस्तावित था। कानून के तहत लोकपाल में अधिकतम आठ सदस्य हो सकते हैं, ऐसे में यह साफ था कि यह खरीद शीर्ष पदाधिकारियों की सुविधा के लिए ही की जा रही थी।

विवाद यहीं तक सीमित नहीं रहा। टेंडर की शर्तों में यह भी उल्लेख था कि चयनित वेंडर को सिर्फ कारें उपलब्ध नहीं करानी होंगी, बल्कि ड्राइवरों और नामित कर्मचारियों के लिए विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था भी करनी होगी। इसमें BMW कारों के कंट्रोल सिस्टम, सेफ्टी फीचर्स, इमरजेंसी हैंडलिंग, पार्किंग तकनीक और फ्यूल एफिशिएंसी मोड्स तक की ट्रेनिंग शामिल थी। इन शर्तों ने भी आलोचकों को यह कहने का मौका दिया कि यह पूरी योजना जरूरत से ज्यादा शाही और गैर-जरूरी है। लगातार बढ़ते दबाव और आलोचना के बीच लोकपाल का यह फैसला सामने आया कि टेंडर को ही रद्द कर दिया जाए। हालांकि, संस्था की ओर से इस निर्णय के पीछे कोई विस्तृत आधिकारिक कारण सार्वजनिक नहीं किया गया है, लेकिन अंदरूनी सूत्रों का कहना है कि शीर्ष स्तर पर हुई बैठकों में यह महसूस किया गया कि इस मुद्दे से लोकपाल की साख को गंभीर नुकसान पहुंच सकता है। ऐसे में विवाद को और बढ़ने देने के बजाय पीछे हटना ही बेहतर विकल्प समझा गया। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह फैसला लोकपाल द्वारा अपनी विश्वसनीयता बचाने और जनता के बीच संयम, पारदर्शिता और नैतिकता की छवि बनाए रखने की कोशिश के तौर पर देखा जाना चाहिए। भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई का दावा करने वाली संस्था अगर खुद ही विलासिता के आरोपों में घिर जाए, तो उसकी नैतिक ताकत कमजोर पड़ सकती है। ऐसे में BMW टेंडर रद्द करना लोकपाल के लिए एक जरूरी सुधारात्मक कदम माना जा रहा है, जो यह संदेश देता है कि सार्वजनिक आलोचना और जनभावना को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

तनातनी के बीच भरोसे की परंपरा कायम, भारत पाकिस्तान ने फिर साझा की परमाणु प्रतिष्ठानों की सूची

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारत और पाकिस्तान के रिश्तों में लंबे समय से चली आ रही तल्खी, सीमा पर तनाव और कूटनीतिक मतभेदों के बावजूद एक अहम भरोसेमंद परंपरा एक बार फिर निभाई गई है। दोनों देशों ने गुरुवार को अपने-अपने परमाणु प्रतिष्ठानों की सूची एक-दूसरे के साथ साझा की। यह प्रक्रिया तीन दशक पुरानी उस द्विपक्षीय व्यवस्था के तहत पूरी की गई, जिसका उद्देश्य दोनों देशों के परमाणु ठिकानों को किसी भी तरह के हमले से सुरक्षित रखना और अनजाने टकराव की आशंका को कम करना है। विदेश मंत्रालय के अनुसार, यह आदान-प्रदान पूरी तरह से राजनयिक माध्यमों के जरिए किया गया। नई दिल्ली और इस्लामाबाद ने तय प्रोटोकॉल के अनुसार एक-दूसरे को अपने परमाणु प्रतिष्ठानों और सुविधाओं से जुड़ी जानकारी सौंपी। मौजूदा समय में जब दोनों देशों के बीच राजनीतिक संवाद लगभग ठप है और सीमा पर तनाव की खबरें समय-समय पर सामने आती रहती हैं, ऐसे में इस प्रक्रिया का पूरा होना अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी खास

महत्व रखता है। दरअसल, भारत और पाकिस्तान के बीच "परमाणु प्रतिष्ठानों और सुविधाओं पर हमले के निषेध" से संबंधित समझौते पर 31 दिसंबर 1988 को हस्ताक्षर किए गए थे। यह समझौता 27 जनवरी 1991 से प्रभावी हुआ था। इसके तहत दोनों देशों पर यह बाध्यता है कि वे हर साल 1 जनवरी को अपने परमाणु प्रतिष्ठानों की सूची एक-दूसरे को सौंपेंगे। इसका मूल उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि किसी भी परिस्थिति में एक-दूसरे के परमाणु ढांचों को निशाना न बनाया जाए, चाहे हालात कितने ही तनावपूर्ण क्यों न हों। विदेश मंत्रालय ने स्पष्ट किया है कि यह सूचियों का लगातार 35वां आदान-प्रदान है। पहली बार यह प्रक्रिया 1 जनवरी 1992 को पूरी की गई थी और तब से हर साल बिना किसी रुकावट के इसे निभाया जाता रहा है। यह तथ्य अपने-आप में महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस दौरान भारत-पाकिस्तान संबंध कई उतार-चढ़ाव से गुजरे हैं, जिनमें युद्ध जैसे हालात, कारगिल संघर्ष, संसद और मुंबई हमले, पुलवामा और बालाकोट जैसे घटनाक्रम शामिल रहे हैं। इसके बावजूद यह व्यवस्था लगातार जारी रही, जो दोनों देशों के बीच सीमित ही सही, लेकिन विश्वास के एक स्थायी तंत्र को दर्शाती है। कूटनीतिक विशेषज्ञों का मानना है कि यह समझौता और उसका नियमित पालन दक्षिण एशिया में रणनीतिक स्थिरता बनाए रखने में अहम भूमिका निभाता है। परमाणु हथियारों से लैस दो पड़ोसी देशों के बीच इस तरह की पारदर्शिता न केवल आपसी गलतफहमियों को कम करती है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय को भी यह संदेश देती है कि दोनों देश परमाणु सुरक्षा के मसले पर जिम्मेदार रवैया अपनाते हैं। हालांकि भारत की ओर से यह भी दोहराया गया है कि पाकिस्तान को सीमा पार आतंकवाद और चरमपंथ पर ठोस कदम उठाने होंगे, तभी द्विपक्षीय रिश्तों में वास्तविक सुधार संभव है। इसके बावजूद परमाणु प्रतिष्ठानों की सूची साझा करने जैसी व्यवस्थाओं को नई दिल्ली रणनीतिक और मानवीय दृष्टि से जरूरी मानती है, क्योंकि किसी भी तरह की चूक या गलत आकलन के परिणाम पूरे क्षेत्र के लिए विनाशकारी हो सकते हैं। कुल मिलाकर, भारत और पाकिस्तान के बीच परमाणु प्रतिष्ठानों की सूची का यह वार्षिक आदान-प्रदान उस न्यूनतम संवाद और भरोसे की कड़ी को दर्शाता है, जो तमाम मतभेदों और तनावों के बावजूद अब तक कायम है। यह परंपरा इस बात की याद दिलाती है कि टकराव के दौर में भी कुछ ऐसे समझौते होते हैं, जो शांति और स्थिरता के लिए अनिवार्य माने जाते हैं और जिन्हें निभाना दोनों देशों के हित में है।

बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों पर हिंसा का खौफनाक चेहरा, हिंदू दवा विक्रेता पर जानलेवा हमला, जिंदा जलाने की कोशिश

(जीएनएस)। शरियतपुर। बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों, विशेषकर हिंदू समुदाय के खिलाफ हिंसा की घटनाएं लगातार गंभीर होती जा रही हैं। एक बार फिर ऐसा ही एक दिल दहला देने वाला मामला सामने आया है, जिसने न केवल स्थानीय प्रशासन बल्कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय को भी चिंता में डाल दिया है। शरियतपुर जिले में 50 वर्षीय हिंदू दवा विक्रेता खोकन दास पर सरेराह हिंसक हमला किया गया, जिसमें उन्हें बेरहमी से पीटा गया और बाद में पेट्रोल डालकर जिंदा जलाने की कोशिश की गई। यह घटना 31 दिसंबर की बताई जा रही है, जब खोकन दास रोज़ की तरह अपना काम खत्म कर घर लौट रहे थे। प्रत्यक्षदर्शियों और स्थानीय सूत्रों के अनुसार, हमलावरों ने पहले खोकन दास पर धारदार हथियारों से हमला किया, जिससे वह गंभीर रूप से घायल होकर सड़क पर गिर पड़े। इसके बाद भीड़ ने उन्हें लात-घूंसों से पीटना शुरू कर दिया। जब इतना भी काफी नहीं लगा, तो आरोप है कि उनके शरीर पर पेट्रोल छिड़ककर आग लगाने की कोशिश की गई। आसपास मौजूद कुछ लोगों की दखल और अफरा-तफरी के कारण वे पूरी तरह जिंदा नहीं जल पाए, लेकिन इस हमले में वे बुरी तरह झुलस गए। उन्हें गंभीर हालत में नजदीकी अस्पताल में

भर्ती कराया गया है, जहां उनकी हालत नाजुक बताई जा रही है। यह घटना कोई अकेला मामला नहीं है, बल्कि बांग्लादेश में हाल के दिनों में हिंदू समुदाय के खिलाफ बढ़ती हिंसा की कड़ी का एक और भयावह उदाहरण है। इससे पहले 18 दिसंबर 2025 को मयमनसिंह जिले के भालुका इलाके में हिंदू गारमेंट वर्कर दीपू चंद्र दास को भीड़ ने ईशनिंदा के आरोप में निशाना बनाया था। उस मामले में दीपू चंद्र दास को पहले बेरहमी से पीटा गया, फिर पेड़ से लटकाया गया और अंत में उनके शरीर पर आग लगा दी गई, जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई। बाद में हुई जांच में ईशनिंदा के आरोप निराधार पाए गए, और पुलिस ने कई आरोपियों को गिरफ्तार किया, लेकिन इस घटना ने पूरे देश में भय और आक्रोश का माहौल पैदा कर दिया था।

इसी तरह 28 दिसंबर को पिरोजपुर जिले के दुमरितला गांव में कई हिंदू परिवारों के घरों को आग के हवाले करने की कोशिश की गई। चट्टोग्राम के रावजान क्षेत्र में भी हिंदू समुदाय के घरों को निशाना बनाकर आगजनी की घटनाएं सामने आईं। स्थानीय लोगों के अनुसार, कुछ मामलों में परिवारों को घर के अंदर बंद कर जलाने की कोशिश की गई, हालांकि समय रहते लोग जान बचाने में सफल रहे। इन घटनाओं ने यह साफ कर दिया है कि अल्पसंख्यक समुदायों में डर का माहौल लगातार गहराता जा रहा है।

राजनीतिक और सामाजिक विश्लेषकों का कहना है कि मुहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार के कार्यकाल में अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा की घटनाओं में चिंताजनक वृद्धि देखी गई है। हालांकि सरकार की ओर से कानून-व्यवस्था बनाए रखने के दावे किए जा रहे हैं, लेकिन ज़मीनी हकीकत इससे उलट नजर आ रही है। मानवाधिकार संगठनों का आरोप है कि कई मामलों में समय पर कार्रवाई नहीं होती, जिससे अपराधियों के हौसले और बुलंद हो जाते हैं।

इन घटनाओं पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी प्रतिक्रिया देखने को मिल रही है। पिछले सप्ताह भारत ने बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों के खिलाफ लगातार हो रही हिंसा पर गंभीर चिंता जताई थी और स्पष्ट कहा था कि वह अपने पड़ोसी देश में हो रहे घटनाक्रम पर पैनी नजर रखे हुए है। इसके अलावा कई वैश्विक मानवाधिकार संगठनों ने भी बांग्लादेश सरकार से अल्पसंख्यकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है। शरियतपुर की ताजा घटना ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि आखिर बांग्लादेश में हिंदू और अन्य अल्पसंख्यक समुदाय कब तक इस तरह के हमलों का शिकार बनते रहेंगे। खोकन दास जैसे आम नागरिक, जो केवल अपनी रोजी-रोटी कमाने और शांतिपूर्ण जीवन जीने की कोशिश कर रहे हैं, अगर उन्हें भी इस तरह की हिंसा का सामना करना पड़े, तो यह पूरे समाज और शासन व्यवस्था के लिए एक गंभीर चेतावनी है।

असम में चुनावी साल से पहले भाजपा का बड़ा सियासी दांव, 37 लाख महिलाओं को एकमुश्त 8 हजार रुपये का ऐलान

(जीएनएस)। दिसपुर। आगामी विधानसभा चुनावों की आहट के बीच असम की राजनीति में हलचल तेज हो गई है। भारतीय जनता पार्टी ने बिहार मॉडल की तर्ज पर असम में भी महिलाओं को केंद्र में रखकर बड़ा चुनावी दांव चला है। मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने घोषणा की है कि राज्य की 37 लाख महिलाओं को एकमुश्त 8 हजार रुपये की नकद सहायता दी जाएगी। यह रकम राज्य सरकार की महत्वाकांक्षी ओरुनोदोई योजना के तहत लाभ पाने वाली महिलाओं को दी जाएगी, जिससे चुनाव से पहले सरकार ने एक मजबूत सामाजिक और राजनीतिक संदेश देने की कोशिश की है। मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने सोशल मीडिया के जरिए इस फैसले की जानकारी साझा करते हुए बताया कि यह सहायता राशि बोहाग बिहू से पहले महिलाओं के खातों में पहुंचा दी जाएगी। सरकार के मुताबिक 20 फरवरी को यह रकम सीधे लाभार्थियों के बैंक खातों में ट्रांसफर की जाएगी। मुख्यमंत्री ने इसे महिलाओं की आर्थिक मजबूती और पारिवारिक जरूरतों को सहारा देने की दिशा में अहम कदम बताया है। सरकारी जानकारी के अनुसार, घोषित 8 हजार रुपये की राशि में ओरुनोदोई योजना के तहत जनवरी से अप्रैल तक मिलने वाले 5 हजार रुपये पहले से शामिल हैं। इसके अलावा 3 हजार रुपये अतिरिक्त राशि बोहाग बिहू के उपहार के रूप में दी जाएगी। इस तरह सरकार ने एक साथ चार महीने की सहायता और त्योहार की सौगात देकर महिलाओं को राहत देने का प्रयास किया है। ओरुनोदोई योजना के तहत राज्य की गरीब और जरूरतमंद महिलाओं को हर महीने आर्थिक सहायता दी जाती है, जिसे असम सरकार की सबसे लोकप्रिय योजनाओं में गिना जाता है।

राजनीतिक जानकारों का मानना है कि यह फैसला सिर्फ कल्याणकारी योजना भर नहीं है, बल्कि इसके पीछे साफ तौर पर चुनावी रणनीति भी दिखाई देती है। बिहार में महिलाओं को नकद सहायता और सामाजिक योजनाओं के जरिए जिस तरह से राजनीतिक लाभ मिला था, उसी मॉडल को अब असम में लागू करने की कोशिश की जा रही है। चुनाव से कुछ महीने पहले एकमुश्त बड़ी राशि देना मतदाताओं, खासकर महिला वोटर्स के बीच सरकार की पकड़ मजबूत कर सकता है।

सरकार का दावा है कि इस पहल का मकसद महंगाई के दौर में महिलाओं और उनके परिवारों को आर्थिक सहारा देना है, ताकि वे दैनिक जरूरतों और त्योहार से जुड़े खर्च आसानी से पूरा कर सकें। असम जैसे राज्य में, जहां बड़ी आबादी ग्रामीण और निम्न आय वर्ग से जुड़ी है, इस तरह की नकद सहायता योजनाएं सीधे तौर पर लोगों के जीवन को प्रभावित करती हैं। यही वजह है कि ओरुनोदोई योजना को पहले से ही सरकार की एक बड़ी उपलब्धि के रूप में पेश किया जाता रहा है।

वहीं विपक्षी दलों ने इस ऐलान को लेकर सवाल भी उठाने शुरू कर दिए हैं। उनका कहना है कि चुनाव नजदीक आते ही सरकार को महिलाओं और गरीबों की याद आ रही है और सरकारी खजाने का इस्तेमाल वोट बैंक मजबूत करने के लिए किया जा रहा है। विपक्ष इसे चुनावी 'लॉलीपॉप' बता रहा है, जबकि भाजपा और राज्य सरकार इसे जनकल्याण और सामाजिक जिम्मेदारी का कदम बता रही है। फिलहाल इतना तय है कि 37 लाख महिलाओं को एक साथ 8 हजार रुपये देने का फैसला असम की सियासत में बड़ा असर डालने वाला है। बोहाग बिहू से पहले मिलने वाली यह राशि न सिर्फ आर्थिक राहत बनेगी, बल्कि आने वाले विधानसभा चुनाव में भाजपा के लिए एक मजबूत चुनावी हथियार के तौर पर भी देखी जा रही है। अब यह देखना दिलचस्प होगा कि यह 'बिहार वाला दांव' असम में भी भाजपा को वही सियासी बढ़त दिला पाता है या नहीं।

महंगाई की आग में सुलगता ईरान, सड़कों पर उतरा आक्रोश हिंसा में बदला

(जीएनएस)। दुबई। ईरान में गहराते आर्थिक संकट ने अब खुलकर सड़कों पर उग्र रूप ले लिया है। बढ़ती महंगाई, गिरती राष्ट्रीय मुद्रा और रोजमर्रा की जरूरतों की चीजों की आसमान छूती कीमतों के खिलाफ शुरू हुआ विरोध प्रदर्शन बुधवार देर रात हिंसक हो गया। पश्चिमी लोरेस्टान प्रांत के कुहदाश्त शहर में हालात उस वक्त बेकाबू हो गए, जब सुरक्षा बलों और प्रदर्शनकारियों के बीच तीखी झड़पें हुईं। इस हिंसा में अर्धसैनिक बल बासिज मिलिशिया के एक सदस्य की मौत हो गई, जबकि 13 अन्य सुरक्षाकर्मी घायल हुए हैं। घटना के बाद इलाके में तनाव और भय का माहौल है। यह विरोध प्रदर्शन शुरुआत में अपेक्षाकृत शांत था और रविवार को दुकानदारों ने अपने कारोबार पर पड़ रहे आर्थिक दबाव के खिलाफ आवाज उठाई थी। लेकिन देखते ही देखते यह आंदोलन स्थानीय दायरे से बाहर निकलकर देशव्यापी आक्रोश में तब्दील हो गया। महंगाई की मार झेल रहे आम नागरिक, छात्र और व्यापारी बड़ी संख्या में सड़कों पर उतर आए। कई शहरों में बाजार बंद रहे और जनजीवन आंशिक रूप से ठप पड़ गया। लोगों का कहना है कि उनकी आमदनी लगातार घट रही है, जबकि खाने-पीने और रोजमर्रा की जरूरतों की चीजें उनकी पहुंच से बाहर होती जा रही हैं।

ईरानी सरकारी मीडिया के अनुसार, बुधवार रात कई शहरों में प्रदर्शनकारियों और सुरक्षा बलों के बीच टकराव हुआ। हालात काबू में करने के लिए पुलिस ने आंसू गैस के गोले छोड़े और कुछ जगहों पर गोलीबारी की घटनाएं भी सामने आईं। कई इलाकों में सरकारी इमारतों और सार्वजनिक संपत्तियों को नुकसान पहुंचाने की कोशिश की गई, जिससे हालात और ज्यादा तनावपूर्ण हो गए। कुहदाश्त में हुई हिंसक झड़पों के बाद वहां अतिरिक्त सुरक्षा बल तैनात कर दिए गए हैं।

सूत्रों के मुताबिक, कुछ स्थानों पर प्रदर्शनकारियों ने राजनीतिक नारों के साथ-साथ ईरान के निर्वासित राजा रजा पहलवी के समर्थन में भी नारे लगाए। यह बात ईरानी सत्ता प्रतिष्ठान के लिए खास तौर पर संवेदनशील मानी जा रही है। इस दौरान बड़ी संख्या में छात्र प्रदर्शनकारियों को हिरासत में लिया गया, हालांकि बाद में कई को रिहा कर दिया गया। ईरान की रिवोल्यूशनरी गार्ड्स ने इन प्रदर्शनों के पीछे असामाजिक और देशविरोधी तत्वों का हाथ होने का आरोप लगाया है और कहा है कि शांतिपूर्ण विरोध की आड़ में हिंसा फैलाने की कोशिश की जा रही है। आर्थिक आंकड़े भी हालात की गंभीरता को उजागर करते हैं। ईरान में दिसंबर महीने में मुद्रास्फीति दर 42.5 प्रतिशत तक पहुंच गई, जिसने आम लोगों की कमर तोड़ दी है। राष्ट्रीय मुद्रा रियाल की लगातार गिरती कीमत ने हालात और बदतर बना दिए हैं। विश्वविद्यालयों के छात्र, छोटे व्यापारी और नौकरीपेशा वर्ग सरकार से ठोस कदम उठाने की मांग कर रहे हैं। लोगों का कहना है कि सरकारी नीतियों और अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों का बोझ सीधे जनता पर पड़ रहा है। सरकार की ओर से हालात संभालने की कोशिशें भी सामने आई हैं। राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियन ने संकेत दिए हैं कि सरकार प्रदर्शनकारियों की जायज मांगों को सुनने के लिए तैयार है और संवाद के जरिए समाधान निकालने की कोशिश की जाएगी। वहीं, सरकारी प्रवक्ता फातिमा मोहजरानी ने कहा है कि अधिकारी ट्रेड यूनियनों, व्यापारिक संगठनों और दुकानदारों के प्रतिनिधियों से सीधे बातचीत कर रहे हैं, ताकि स्थिति को शांत किया जा सके।

फिलहाल ईरान के कई हिस्सों में हालात तनावपूर्ण बने हुए हैं। सड़कों पर सुरक्षा बलों की मौजूदगी बढ़ा दी गई है और सरकार किसी भी तरह की अराजकता को रोकने के लिए सतर्क है। लेकिन जिस तरह से आर्थिक दबाव और जनता का गुस्सा बढ़ता जा रहा है, उससे यह साफ है कि ईरान के सामने यह संकट सिर्फ कानून-व्यवस्था का नहीं, बल्कि भरोसे और आजीविका से जुड़ा एक गहरा सामाजिक और आर्थिक सवाल बन चुका है।

गरवी गुजरात
हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO.
2002

Jio Air Fiber
Jio Tv +
Jio Fiber
Daily Hunt
ebaba Tv
Dish Plus
DTH live OTT
Rock TV
Airtel
Amezone Fire
Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
गरवी गुजरात हिंदी चेनल देखिये

संपादकीय

सुधारों की बात, भारत रिफॉर्म एक्सप्रेस पर सवार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा वर्ष 2025 को "सुधारों का वर्ष" कहे जाने और यह भरोसा दिलाने कि भारत अब रिफार्म एक्सप्रेस पर सवार हो चुका है, निस्संदेह एक बड़े दृष्टिकोण को दर्शाता है। यह कथन केवल राजनीतिक उत्साह भर नहीं है, बल्कि उसके पीछे वह दीर्घकालिक लक्ष्य भी निहित है, जिसके तहत वर्ष 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने का संकल्प लिया गया है। हालांकि किसी भी सुधार की वास्तविक सार्थकता केवल घोषणाओं या कानून बनाने से नहीं, बल्कि उसके जमीनी प्रभाव से आंकी जाती है। जब तक सुधार आम नागरिक के जीवन में ठोस बदलाव के रूप में दिखाई नहीं देते, तब तक उनके सफल होने का दावा अधूरा ही माना जाएगा।

इस तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता कि वर्ष 2025 में कई बड़े और साहसिक सुधार किए गए। इनमें सबसे प्रमुख वस्तु एवं सेवा कर यानी जीएसटी में किए गए व्यापक बदलाव रहे, जिनका उद्देश्य कर व्यवस्था को सरल, पारदर्शी और अधिक प्रभावी बनाना था। इसके अलावा बीमा क्षेत्र में सौ प्रतिशत विदेशी प्रत्यक्ष निवेश की अनुमति देना भी एक ऐसा कदम है, जिससे इस क्षेत्र में पूंजी, तकनीक और प्रतिस्पर्धा बढ़ने की उम्मीद की जा रही है। इसी तरह श्रम सुधारों के तहत 29 पुराने और जटिल कानूनों को चार आधुनिक श्रम संहिताओं में समेटकर लागू करना, लंबे समय से चली आ रही मांग को पूरा करता है। इन सुधारों को यदि नीतिगत स्तर पर देखा जाए, तो इन्हें निस्संदेह बड़े और दूरगामी कदम कहा जा सकता है। लेकिन सुधारों की असली परीक्षा कागजों पर नहीं, बल्कि व्यवहार में होती है। अभी इन सुधारों का व्यापक और ठोस प्रभाव सामने आना शेष है। उदाहरण के लिए, जीएसटी में किए गए बदलावों से करदाताओं को कितनी राहत मिली, छोटे और मध्यम कारोबारियों की समस्याएं कितनी कम हुईं और राजस्व संग्रह में स्थिरता कितनी आई, इसका आकलन आने वाले समय में ही संभव होगा। इसी तरह बीमा क्षेत्र में विदेशी निवेश बढ़ने से क्या वास्तव में आम नागरिक को बेहतर और सस्ती बीमा सुविधाएं मिलेंगी या नहीं, यह भी समय के साथ स्पष्ट होगा। मनरेगा में किए गए बुनियादी बदलाव और वीबी-जीरामजी नामक नए कानून का मामला भी कुछ ऐसा ही है। सरकार का दावा है कि इससे रोजगार सृजन की प्रक्रिया अधिक प्रभावी होगी और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी। लेकिन इस कानून के सकारात्मक परिणाम कितनी जल्दी और कितनी व्यापकता के साथ सामने आते हैं, यह भविष्य ही बताएगा। यही स्थिति शिक्षा सुधारों, कारोबारी सुगमता और परमाणु ऊर्जा से जुड़े उन सुधारों की भी है, जो इस वर्ष लागू किए गए। सुधारों के पीछे जो उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं, उनकी हर हाल में पूर्ति हो, यह सुनिश्चित करना सरकार और प्रशासन की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। सुधार केवल आंकड़ों और रिपोर्टों में ही सफल न दिखें, बल्कि आम आदमी को भी उनके फायदे महसूस हों, तभी उनका औचित्य सिद्ध होगा। विभिन्न क्षेत्रों में किए गए सुधारों को प्रभावी बनाने के लिए यह अनिवार्य है कि नौकरशाही के हर स्तर पर भी सुधार हो। यह सही है कि केंद्र सरकार के स्तर पर उच्च नौकरशाही के कामकाज में कुछ हद तक बदलाव देखने को मिला है। डिजिटल प्रक्रियाओं का विस्तार, फाइलों के निपटारे में तेजी और जवाबदेही पर जोर इसके उदाहरण हैं। लेकिन निचले स्तर पर स्थिति आज भी लगभग वैसी ही बनी हुई है। आम नागरिक को अभी भी छोटी-छोटी सेवाओं के लिए दफ्तरों के चक्कर लगाने पड़ते हैं और प्रक्रियाओं की जटिलता उसकी परेशानी बढ़ाती है। सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि नौकरशाही में भ्रष्टाचार खत्म होने का नाम नहीं ले रहा है। सुधारों के बावजूद यदि भ्रष्टाचार पर प्रभावी अंकुश नहीं लग पाता, तो उनका लाभ जनता तक पहुंचने से पहले ही बीच में ही रुक जाता है। यही कारण है कि आम आदमी को अक्सर यह महसूस होता है कि सरकार भले ही बड़े-बड़े सुधार कर रही हो, लेकिन उसकी रोजमर्रा की समस्याएं जस की तस बनी हुई हैं। उसे आज भी कदम-कदम पर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, चाहे वह व्यवसाय शुरू करने का मामला हो, किसी योजना का लाभ लेने का या फिर बुनियादी सेवाओं तक पहुंच का। यह समझना आवश्यक है कि सुधारों को सही ढंग से लागू करने के मामले में अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। इस दिशा में प्रधानमंत्री के हालिया वक्तव्य महत्वपूर्ण संकेत देते हैं। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि राज्यों को मैन्युफैक्चरिंग को बढ़ावा देने के साथ-साथ कारोबारी सुगमता में सुधार और सेवा क्षेत्र को मजबूत करने पर विशेष ध्यान देना होगा।

भविष्य के भारत को बनाने का समय

> नए वर्ष में यह अनदेखी नहीं की जा सकती कि सीमाओं पर आतंकी तत्वों की ओर से लगातार चुनौती आती रहती है। ऐसे में सतत चौकसी और सावधानी की जरूरत बनी हुई है। इसी तरह प्राकृतिक आपदाओं से मिलते संकेत जलवायु-परिवर्तन और तापमान में लगातार वृद्धि जैसे बदलाव पर्यावरणीय संकट की जटिलता को बता रहे हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा और मूल्य दृष्टि प्रकृति के साथ संतुलन और सह-जीवन पर बल देती आई है।

पिछले एक दशक में भारत की छवि निश्चित रूप से एक सशक्त देश के रूप में निखरी है। नए वर्ष में इस बदलते भारत के भविष्य के बारे में सोचते हुए हमें देश की समृद्ध प्राचीन सभ्यता और आधुनिक राष्ट्र-राज्य की संकल्पना, दोनों को ध्यान में रखना होगा। लोक की स्मृति में अभी भी नैतिक और न्यायपूर्ण शासन के लिए रामराज्य की अमिट छवि कायम है। इसलिए जहां वैश्वीकरण के अनुकूल आकांक्षाओं को ध्यान में रखना होगा, वहीं नैतिकता, सत्य तथा अहिंसा जैसे मानदंडों की भी चिंता करनी है। देश की प्रगति की कथा को देखें तो उसमें निरंतरता और परिवर्तन दोनों के तत्व मिलते हैं। इस नए वर्ष में हमें संयत होकर यह विचार करना होगा कि विकसित भारत कैसा होगा, क्योंकि भारतीय समाज में अनेक प्रकार की बहुलताएं हैं, जिसे लेकर कुछ विचारक देश की मौलिक एकता को प्रश्नांकित करते हैं। वे भूल जाते हैं कि भारतीय दृष्टि में बहुलता अंतर्निहित मौलिक एकता का ही प्रकटन होती है-एकम् सद् विप्रा बहुधा वदंति। इसी एकता को खोजना पहचानने का उद्देश्य होना चाहिए। पूरे प्राणी जगत में निकटता को आधार बना कर विविधताओं का सह-अस्तित्व और पारस्परिक संवाद इस भारत का मौलिक सोच रहा है। यह अकारण नहीं है कि परिवार या कुटुंब का रूपक हमारे सोच में केंद्रीय है। देश की एकता, देश को अपनाने के भाव और देशप्रेम के लिए भी यह दृष्टि जरूरी है।

बीता वर्ष भारत के लिए चुनौतियों भरा रहा। अमेरिकी नीति ने भारत के निर्यात, रुपये की हैसियत, निवेश तथा भुगतान संतुलन आदि को लेकर मुश्किलें खड़ी कर दीं। राष्ट्रपति ट्रंप की अमेरिकी हितों को आक्रामक ढंग से आगे धकेलने की नीति ने हमारा अहित किया। इसे देखते हुए स्थिति को संभालने के लिए भारत ने कई कदम उठाए गए। जीएसटी की दरें कम की गईं और श्रम कानूनों में बदलाव लाया गया। यह बड़ी उपलब्धि है कि अंतरराष्ट्रीय अनिश्चितिता की विकट परिस्थितियों में भी भारत की जीडीपी की दर विश्व में अव्वल दर्जे की बनी रही।

खुदरा महंगाई दर भी आठ साल में सबसे कम रही। अच्छी पैदावार, आपूर्ति श्रृंखला में सुधार, कच्चे तेल की कम कीमतों ने इन परिस्थितियों में मदद की। शेयर बाजार में घरेलू निवेशक हमारी अर्थव्यवस्था की ताकत बने। आयकर रिटर्न के दाखिलों और कर-संग्रह में भी सुधार हुआ। बिजली, शहरी विकास, खनन, और वित्तीय सेवा के क्षेत्र में नई पहलें की गईं। भारत एक बड़ी वैश्विक आर्थिक शक्ति बनने की राह पर अग्रसर है और अनुमान है कि 2030 तक 7.3 ट्रिलियन (लाख करोड़) डालर जीडीपी के साथ वह दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा।

सामाजिक संरचना की दृष्टि से देश में मध्यम वर्ग का आकार बढ़ रहा है, जिससे खपत और शहरीकरण में वृद्धि और गरीबी में कमी के आसार बन रहे हैं। देश में बुनियादी ढांचा विस्तृत हो रहा है। डिजिटल प्रौद्योगिकी, कृत्रिम मेधा (एआइ), अंतरिक्ष विज्ञान, मेट्रो और बुलेट ट्रेन आदि को लेकर भी प्रगति दर्ज हो रही है। मेड इन इंडिया के तहत मैन्यूफैक्चरिंग, आइटी, स्वास्थ्य सेवा और स्टार्टअप्स में भारी वृद्धि से रोजगार के नए अवसर बढ़ रहे हैं। उत्पादन क्षेत्र में प्रगति की संभावना दिख रही है और स्वदेशी विकास की नीति अपनाई जा रही है। अनुमान है कि 5-जी और रोबोटिक्स के उपयोग का दायरा विस्तृत होता जाएगा। अब आनलाइन खरीदारी और ओटीटी प्लेटफार्म तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। भविष्य में एआइ का प्रभुत्व और भी बढ़ेगा। उसी के साथ साइबर अपराध भी बढ़ सकते हैं। ऐसे में साइबर सुरक्षा बड़ा महत्वपूर्ण सरोकार बन रहा है। यह भी याद रखना जरूरी है कि देश का भविष्य सिर्फ आर्थिक उन्नति के सूचकों तक सीमित नहीं किया जा सकता। आर्थिक विकास को केवल वृद्धि दर के अर्थ में ही नहीं, बल्कि रोजगार के अधिक अवसर, सामाजिक गतिशीलता और आम जनों के जीवन-स्तर में उन्नति के संदर्भ में भी देखना होगा। सबके लिए गुणवत्तापूर्ण जीवन सुनिश्चित करने के लिए आर्थिकी को ज्ञान-केंद्रित और सामाजिक रूप से ज्यादा उत्तरदायी भी बनाना होगा।

आत्मनिर्भर भारत के लिए अवसर है, पर हम अपनी सीमाओं को भी अनदेखा नहीं कर सकते। युवा भारत को अक्सर एक पूंजी के रूप में घोषित किया जाता है, पर इसके लिए कौशल, स्वास्थ्य और शिक्षा में निवेश करना होगा। कौशल विकास की कमी और युवाओं में बेरोजगारी के चलते समाज में असंतोष पैदा हो रहा है। नई शिक्षा नीति की विसंगतियों को दूर कर उसके कार्यान्वयन के लिए गंभीर प्रयास करने होंगे। शिक्षा की पहुंच, उसकी गुणवत्ता और प्रासंगिकता को लेकर संशय बना हुआ है। इसी तरह सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा की मुश्किलें भी बढ़ी हैं। मानसिक स्वास्थ्य के लिए जरूरी सुविधाएं पर्याप्त नहीं हैं। अभी भी महिला श्रम-भागीदारी निम्न दर पर है। आय और संपत्ति की असमानता भी बढ़ी है और अनौपचारिक क्षेत्र की असुरक्षा बनी हुई है। साथ ही जाति, वर्ग, लिंग और क्षेत्रीय विषमताएं भी हैं। इन्हें दूर कर बहिष्कृत जनों का समावेश जरूरी होगा, अन्यथा राजनीतिक दलों द्वारा सामाजिक ध्रुवीकरण कर चुनावी लाभ लेने का चक्र चलता रहेगा। हमें बहुलता और राष्ट्रीय एकता को जोड़ना आवश्यक है।

नए वर्ष में यह अनदेखी नहीं की जा सकती कि सीमाओं पर आतंकी तत्वों की ओर से लगातार चुनौती आती रहती है। ऐसे में सतत चौकसी और सावधानी की जरूरत बनी हुई है। इसी तरह प्राकृतिक आपदाओं से मिलते संकेत जलवायु-परिवर्तन और तापमान में लगातार वृद्धि जैसे बदलाव पर्यावरणीय संकट की जटिलता को बता रहे हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा और मूल्य दृष्टि प्रकृति के साथ संतुलन और सह-जीवन पर बल देती आई है। हमें अनिवार्य रूप से उपभोक्तावाद पर लगाम लगाते हुए ऐसी जीवनशैली अपनानी होगी, जो पर्यावरण और सतत विकास के विरुद्ध न हो। भारत का भविष्य उज्ज्वल और संभावनाओं से भरा है, लेकिन उसे गरीबी, जलवायु परिवर्तन और सामाजिक असमानताओं जैसी चुनौतियों का भी सामना करना पड़ रहा है। यह भी जरूरी होगा कि लोकतांत्रिक संस्थाओं में जनता का भरोसा बढ़े और सामाजिक संवाद तथा सहिष्णुता को बढ़ावा मिले।

प्रेरणा

शांति का रास्ता ही सच्ची विजय का मार्ग

मानव जीवन में टकराव और असहमति कोई नई बात नहीं है। जहां विचार होते हैं, वहां मतभेद भी होते हैं और जहां मतभेद होते हैं, वहां क्रोध का जन्म होना स्वाभाविक है। समस्या क्रोध के पैदा होने में नहीं, बल्कि उसके नियंत्रण से बाहर हो जाने में है। क्रोध जब विवेक पर हावी हो जाता है, तब व्यक्ति ऐसे निर्णय ले बैठता है, जिनका दुष्परिणाम उसे लंबे समय तक भुगतना पड़ता है। शांति में समाधान खोजने की क्षमता ही मनुष्य को साधारण से असाधारण बनाती है, और यही गुण उसे सच्चा विजेता भी बनाता है।

अब्राहम लिंकन के जीवन से जुड़ी एक छोटी-सी घटना इस सत्य को बहुत सहज ढंग से समझा देती है। एक बार एक युवक अत्यंत क्रोधित अवस्था में उनके पास पहुंचा। उसका मन आक्रोश से भरा हुआ था। उसने शिकायत की कि उसके सहकर्मी ने उसका अपमान किया है और वह उसी भाषा में जवाब देकर उसे नीचा दिखाना चाहता है। युवक के लिए यह आत्मसम्मान का प्रश्न बन चुका था। उसे लगता था कि यदि वह चुप रहा, तो लोग उसे कमजोर समझेंगे और उसका मान-सम्मान समाप्त हो जाएगा।

लिंकन ने युवक की बात ध्यानपूर्वक सुनी। उन्होंने न तो उसे तुरंत टोका और न ही कोई लंबा उपदेश दिया। वे उसे अपने साथ खेतों की ओर ले गए। वहां खेतों के बीच एक संकरा रास्ता था, जिस पर कीचड़ जमा हुआ था। थोड़ी ही देर में सामने से एक गाड़ी आती दिखाई दी। रास्ता इतना तंग था कि एक समय में केवल एक ही गाड़ी निकल सकती थी। यदि दोनों चालक अपनी-अपनी जिद पर अड़ जाते, तो किसी का भी आगे बढ़ना संभव नहीं था। लिंकन ने युवक से शांत स्वर में पूछा कि यदि दोनों चालक यह कहें कि पहले मैं निकलूंगा, तो क्या होगा। युवक ने सहजता से उत्तर दिया कि दोनों गाड़ियां वहीं फंस जाएंगी और रास्ता पूरी तरह जाम हो जाएगा। इस उत्तर में ही समस्या का समाधान छिपा हुआ था। लिंकन ने मुस्कुराते हुए कहा कि जीवन भी इसी तरह का एक संकरा रास्ता है। यदि हम हर परिस्थिति में अपनी जिद को सर्वोपरि रखेंगे, तो आगे बढ़ने का मार्ग बंद हो जाएगा। उन्होंने युवक को समझाया कि कभी-कभी पीछे हटना कायरता नहीं होती, बल्कि यह समझदारी और दूरदृष्टि का प्रतीक होता है। हर बार जवाब देना आवश्यक नहीं होता और हर अपमान का प्रतिशोध लेना भी अनिवार्य नहीं है। शांति से लिया गया निर्णय न केवल वर्तमान समस्या को हल करता है, बल्कि भविष्य के लिए भी रास्ता साफ करता है। इसके विपरीत, क्रोध में लिया गया निर्णय अक्सर नई समस्याओं को जन्म देता है।

लिंकन ने अपने जीवन के अनुभव साझा करते हुए कहा कि उन्होंने सत्ता और राजनीति के शिखर पर रहते हुए भी अनेक बार अपमान, आलोचना और विरोध का सामना किया, लेकिन यदि वे हर बार क्रोध में प्रतिक्रिया देते, तो शायद वे अपने लक्ष्य तक कभी नहीं पहुंच पाते। उन्होंने सीखा कि क्रोध मन को भारी बना देता है और भारी मन से लिया गया निर्णय अक्सर गलत होता है। शांत मन ही स्पष्ट सोच और सही दिशा प्रदान करता है।

युवक की आंखों में धीरे-धीरे आक्रोश की जगह समझदारी उतरने लगी। उसे यह एहसास हुआ कि यदि वह भी अपने सहकर्मी की तरह क्रोध का सहारा लेगा, तो दोनों के बीच की दूरी और बढ़ेगी। विवाद सुलझने के बजाय और उलझ जाएगा। उसने यह भी समझा कि संयम अपनाने से उसका सम्मान कम नहीं होगा, बल्कि बढ़ेगा। समाज में वही व्यक्ति आदर पाता है, जो कठिन परिस्थितियों में भी अपने विवेक को नहीं खोता।

आज के समय में यह शिक्षा और भी अधिक प्रासंगिक हो गई है। तेज़ रफ्तार जीवन, प्रतिस्पर्धा और तनाव ने लोगों को चिड़चिड़ा बना दिया है। छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा आ जाना, कटु शब्दों का प्रयोग करना और तुरंत प्रतिक्रिया देना आम हो गया है। सोशल मीडिया ने तो इस प्रवृत्ति को और बढ़ा दिया है, जहां लोग बिना सोचे-समझे कुछ भी कह देते हैं और बाद में पछताते हैं। यदि हम एक क्षण ठहरकर सोचें और शांति से प्रतिक्रिया दें, तो अनेक विवाद अपने आप समाप्त हो सकते हैं।

शांति का अर्थ अन्याय को सहना नहीं है। शांति का अर्थ है सही समय और सही तरीके से अपनी बात रखना। संयम व्यक्ति को कमजोर नहीं, बल्कि भीतर से मजबूत बनाता है। जो व्यक्ति अपने क्रोध पर नियंत्रण रख सकता है, वही वास्तव में शक्तिशाली होता है। यह आंतरिक शक्ति ही उसे जीवन के कठिन मोड़ों पर सही निर्णय लेने में सहायता करती है।

युवक जब लिंकन से विदा हुआ, तो वह पहले से बिल्कुल अलग था। उसके मन का बोझ हल्का हो चुका था। उसने निश्चय किया कि वह अपमान का उत्तर मर्यादा और संयम के साथ देगा। इस निर्णय ने उसे मानसिक शांति भी दी और आत्मसम्मान भी। उसने समझ लिया कि प्रतिशोध क्षणिक संतोष देता है, जबकि संयम स्थायी सम्मान।

अंततः जीवन हमें बार-बार ऐसे मोड़ों पर लाकर खड़ा करता है, जहां हमें चुनना होता है कि हम जिद का रास्ता अपनाएं या समझदारी का। शांति में समाधान खोजने वाला व्यक्ति न केवल स्वयं आगे बढ़ता है, बल्कि दूसरों के लिए भी मार्ग प्रशस्त करता है। यही सच्ची विजय है और यही वह मूल्य है, जो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र—तीनों को आगे ले जाता है।

आर्थिक मोर्चे पर अच्छी संभावनाएं

नए साल 2026 की आर्थिक संभावनाओं पर प्रकाशित विभिन्न वैश्विक आर्थिक संगठनों की रिपोर्टों के अनुसार नव वर्ष भारत के लिए बेहतर आर्थिक संभावनाओं वाला होगा। केयर एज रेटिंग्स के अनुसार आगामी वित्तीय वर्ष 2026-27 में भारतीय अर्थव्यवस्था सात प्रतिशत की दर से बढ़ सकती है। ऐक्सिस बैंक की रिपोर्ट के अनुसार आगामी वर्ष में भारत की विकास दर 7.5 प्रतिशत के ऊंचे स्तर पर पहुंचती दिख सकती है। जहां भारत वर्ष 2025 में 4.18 ट्रिलियन (लाख करोड़) डालर की जीडीपी के साथ दुनिया की चौथी सबसे बड़ी आर्थिकी बन गया है। नए साल में भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की डगर पर आगे बढ़ेगा। वैश्विक निवेश फर्म इन्वेस्को का कहना है कि इस साल भी भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था के रूप में अपनी स्थिति कायम रखेगा। हालांकि वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं के बीच भारत को आर्थिक और वित्तीय सुधारों को गति भी देनी होगी।

नए वर्ष में घरेलू बाजार की मजबूती भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए मजबूत आधार बनी रहेगी। इस दौरान भारत का घरेलू बाजार 10 प्रतिशत से अधिक की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) से बढ़ेगा और इस तेज गति से वर्ष 2030 तक भारत का घरेलू बाजार लगभग 237 अरब डालर की ऊंचाई पर पहुंच सकता है। 2026 में महंगाई घटने, टैक्स सुधार और ब्याज दर में कमी से घरेलू बाजार को रफ्तार से बढ़ने के आधार मिलेंगे। रिजर्व बैंक का कहना है कि 2026 में महंगाई में नरमी बनी रहेगी। गत वर्ष जीएसटी की दरों में सुधारों की जो पहल शुरू हुई है, उसके फल इस साल और व्यापक रूप से मिलने शुरू होंगे। नए वर्ष में मनेरगा की जगह लागू वीबी-जी राम जी से भी ग्रामीण रोजगार और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी।

एक अप्रैल से लागू किया जाने वाला नया इनकम टैक्स कानून महज कुछ धाराओं के बदलाव ही नहीं, बल्कि पूरी टैक्स व्यवस्था के कायापलट के साथ आर्थिकी को आगे बढ़ाया है। इससे मध्यम वर्ग के लोगों की क्रय शक्ति बढ़ेगी। इससे मांग बढ़ेगी और निजी निवेश को भी बढ़ावा मिलेगा। रिजर्व बैंक ने ब्याज दरों में कटौती का जो सिलसिला शुरू किया, उसके इस साल भी जारी रहने के ही आसार हैं। इससे भी मांग और खपत में तेजी आएगी। वैश्विक वित्तीय सलाहकार फर्म ग्लोबल वेल्थ मैनेजर की नई रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2026 खपत के स्तर में सुधार के मामले में भारत दुनिया का सबसे आकर्षक बाजार होगा। बढ़ते उद्योग-कारोबार, सर्विस सेक्टर, बुनियादी ढांचा, शेयर बाजार और मध्यम वर्ग की क्रय शक्ति के कारण देश में जीएसटी और इनकम टैक्स संग्रहण में तेज वृद्धि होगी। वित्त वर्ष 2025-26 में अप्रैल से नवंबर 2025 के बीच जीएसटी संग्रह गत वर्ष की इसी अवधि से बढ़कर 14.75 लाख करोड़ रुपये हो गया है। इसी प्रकार मौजूदा वित्त वर्ष 2025-26 में बीते हुए वर्ष से अधिक आयकर रिटर्न और अधिक आयकर प्राप्ति का परिदृश्य उभरकर दिखाई दे रहा है। चालू वित्त वर्ष 2025-26 के लिए दिसंबर तक 8.44 करोड़ आयकर रिटर्न दाखिल किए गए हैं।

भारत द्वारा ब्रिटेन, ओमान और न्यूजीलैंड के साथ किए गए मुक्त व्यापार समझौते इस साल अमल में आएंगे। साथ ही अमेरिका, यूरोपीय संघ, पेरू, चिली, आसियान, मेक्सिको, कनाडा, दक्षिण अफ्रीका, इजरायल, गल्फ कंट्रीज काउंसिल सहित अन्य प्रमुख देशों के साथ भी एफटीए आकार लेते हुए दिखाई देंगे। नए वर्ष में मारीशस, संयुक्त अरब अमीरात यानी यूएई, आस्ट्रेलिया और चार यूरोपीय देशों आइसलैंड, स्विट्जरलैंड, नार्वे और लिकटेंस्टाइन के समूह यूरोपियन फ्री ट्रेड एसोसिएशन (एफ्टा) के बीच हुए एफटीए के लाभ भी पिछले वर्ष की तुलना में अधिक मिलेंगे। इन सबके साथ-साथ नए वर्ष 2026 में कई और अच्छी आर्थिक संभावनाएं दिखाई दे रही हैं।

वर्ष 2026 में भारतीय शेयर बाजार रफ्तार से आगे बढ़ेगा और बड़ी संख्या में विदेशी निवेशकों का रुझान भारत की ओर बढ़ेगा। एक अप्रैल 2026 से नए श्रम कानून लागू होने से उद्योग-कारोबार व निर्यात बढ़ने का परिदृश्य उभरकर दिखाई देगा। निःसंदेह वर्ष 2026 में भारत के लिए बेहतर आर्थिक संभावनाएं दिखती हैं, लेकिन भारत को अपनी मजबूत आर्थिक गति को बनाए रखने के लिए वैश्विक आर्थिक अनिश्चितता के बीच घरेलू खपत बढ़ाने, रोजगार सृजन और राजकोषीय घाटे पर नियंत्रण के साथ आर्थिक सुधारों की डगर पर आगे बढ़ना होगा। इन सुधारों के तहत अगली पीढ़ी के सुधार, जीवन एवं कारोबारी सुगमता, बुनियादी ढांचा सुधार, प्रशासन को सशक्त बनाने और आर्थिकी को मजबूती देने संबंधी सुधार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, देश को कृषि, बैंकिंग, परिवहन और दूरसंचार, बिजली, परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्ष, रक्षा, पेट्रोलियम, कोयला और अन्य खनिज आदि सुधारों को भी गति देना होगा।

आशा है कि सरकार नए साल में विश्व बैंक की वित्तीय क्षेत्र आकलन (एफएसए) समिति की उस रिपोर्ट को अवश्य ध्यान में रखेगी, जिसमें कहा गया है कि भारत को उद्योग-कारोबार के मजबूत विकास के लिए आर्थिक-वित्तीय क्षेत्र में तेज सुधारों के साथ निजी पूंजी जुटाने को बढ़ावा देना होगा। नए साल में विनिर्माण गतिविधियों को मजबूती मिलने की संभावना है। यह भी उम्मीद है कि आने वाले समय में डालर के मुकाबले रुपया मजबूत होगा और कर सुधार एवं ब्याज दर में कटौती से विकास दर को रफ्तार मिलेगी।

अभियान

सातवें द्वार के पीछे छिपी आस्था, शक्ति और अनकहा इतिहास

केरल की राजधानी तिरुवनंतपुरम में स्थित भगवान विष्णु को समर्पित पद्मनाभस्वामी मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता, आस्था और रहस्य का ऐसा संगम है, जिसने पूरी दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींचा है। यह मंदिर जितना अपनी भव्यता, प्राचीनता और दिव्यता के लिए प्रसिद्ध है, उतना ही अपने तहखानों और विशेष रूप से सातवें द्वार के कारण रहस्य और भय का विषय बना हुआ है। इस मंदिर से जुड़ी मान्यताएं, ऐतिहासिक घटनाएं और आधुनिक समय में हुए खुलासे इसे सामान्य मंदिरों से बिल्कुल अलग स्थान पर खड़ा कर देते हैं। सदियों तक पद्मनाभस्वामी मंदिर केवल स्थानीय श्रद्धालुओं और त्रावणकोर राजवंश की आस्था का केंद्र रहा। मंदिर की पहचान भगवान विष्णु की भव्य 18 फीट लंबी शयन मुद्रा वाली प्रतिमा से थी, जहां भगवान शेषनाग पर विश्राम करते हुए दर्शन देते हैं। लेकिन वर्ष 2011 में जब मंदिर के तहखानों को लेकर मामला सर्वोच्च न्यायालय तक पहुंचा और छह तहखानों को खोला गया, तब दुनिया के सामने ऐसा सच आया, जिसने इतिहास, अर्थशास्त्र और धर्म—तीनों को हिला कर रख दिया। इन तहखानों से निकले अकूत खजाने ने पद्मनाभस्वामी मंदिर को विश्व का सबसे समृद्ध मंदिर घोषित कर दिया। सोने के सिंहासन, स्वर्ण मुद्राएं, हीरे-जवाहरात, बहुमूल्य रत्नों से जड़े आभूषण और सदियों पुराने बहुमूल्य सामान—इन सबने यह संकेत दिया कि यह खजाना केवल आर्थिक संपदा नहीं, बल्कि ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर भी है। लेकिन इसी खोज के बीच एक ऐसा द्वार सामने आया, जिसे आज तक नहीं खोला गया—सातवां द्वार। यही द्वार पद्मनाभस्वामी मंदिर को रहस्यमयी और भयावह बना देता है।

इस सातवें द्वार को 'बी वॉल्ट' या 'कल्लारा बी' के नाम से जाना जाता है। यह द्वार बाकी तहखानों से कई मायनों में अलग है। जहां अन्य तहखानों के दरवाजे लोहे और पत्थर से बने हैं, वहीं यह द्वार लकड़ी से निर्मित है। इस पर उकेरी गई विशाल नाग की आकृति इसे और भी रहस्यमय बना देती है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, यह द्वार साधारण ताले से बंद नहीं है, बल्कि इसे शक्तिशाली मंत्रों द्वारा सुरक्षित किया गया है।

पौराणिक कथाओं में कहा जाता है कि इस द्वार को केवल वही पुजारी खोल सकता है, जिसे गरुड़ मंत्र के पूर्ण, शुद्ध और सिद्ध जाप का ज्ञान हो। यह मंत्र सामान्य वेदपाठ से कहीं अधिक जटिल और दुर्लभ माना जाता है। मान्यता है कि यदि इस मंत्र का उच्चारण किसी अयोग्य व्यक्ति द्वारा किया गया, तो उसका परिणाम विनाशकारी हो सकता है। यही कारण है कि आज तक किसी ने इस द्वार को खोलने का साहस नहीं किया।

धार्मिक विश्वासों के अनुसार, इस द्वार की रक्षा स्वयं भगवान विष्णु के नाग अवतार करते हैं। नाग को भारतीय संस्कृति में शक्ति, रहस्य और चेतना का प्रतीक माना जाता है। मंदिर के सातवें द्वार पर नाग की आकृति इस बात का संकेत मानी जाती है कि यह स्थान सामान्य नहीं, बल्कि अत्यंत पवित्र और शक्तिशाली है। कुछ संतों और विद्वानों का मानना है कि इस तहखाने में केवल खजाना नहीं, बल्कि अत्यधिक आध्यात्मिक ऊर्जा भी संचित है, जिसे बिना तैयारी के छेड़ना मानव के लिए घातक हो सकता है।

जब वर्ष 2011 में मंदिर के अन्य तहखानों को खोला गया, उसी दौरान सातवें द्वार को खोलने की मांग भी उठी। कुछ लोगों का तर्क था कि जब अन्य तहखानों को खोला गया है, तो इस द्वार को भी खोला जाना चाहिए ताकि मंदिर की पूरी संपत्ति का आकलन हो सके। लेकिन इस मांग का तीखा विरोध हुआ। केरल ही नहीं, पूरे देश के साधु-संतों, धार्मिक गुरुओं और ज्योतिषियों ने चेतावनी दी कि इस द्वार को खोलना अनिष्ट को आमंत्रण देने जैसा होगा।

इसी दौरान कुछ ऐसी घटनाएं भी घटीं, जिन्होंने लोगों के भय को और गहरा कर दिया। तहखानों की जांच से जुड़े कुछ लोगों की असामयिक मृत्यु, मंदिर के आसपास समुद्र में अचानक ऊंची लहरें उठना, और कुछ प्राकृतिक असामान्यताओं को लोगों ने सातवें द्वार से जोड़ दिया। हालांकि इन घटनाओं का कोई वैज्ञानिक प्रमाणिक संबंध सिद्ध नहीं हो सका, लेकिन आस्था और भय के संसार में इन संयोगों ने गहरी छाप छोड़ी।

मामला जब सर्वोच्च न्यायालय पहुंचा, तो यह केवल कानूनी प्रश्न नहीं रहा। अदालत के सामने धर्म, परंपरा, आस्था और आधुनिक प्रशासन—सब एक साथ खड़े थे। सुप्रीम कोर्ट ने मंदिर के खजाने की सुरक्षा और प्रबंधन को लेकर दिशा-निर्देश दिए, लेकिन सातवें द्वार को खोलने की अनुमति नहीं दी। यह निर्णय इस बात का संकेत था कि न्यायपालिका भी इस विषय में अत्यंत संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाना चाहती है।

पद्मनाभस्वामी मंदिर का इतिहास त्रावणकोर राजवंश से गहराई से जुड़ा हुआ है। त्रावणकोर के राजा भगवान विष्णु को अपना आराध्य मानते थे। वर्ष 1750 में महाराजा मार्तंड वर्मा ने ऐतिहासिक 'त्रिपाददानम्' की घोषणा की, जिसके तहत उन्होंने अपना राज्य, संपत्ति और सत्ता भगवान पद्मनाभस्वामी को समर्पित कर दी। इसके बाद से त्रावणकोर के शासक स्वयं को राजा नहीं, बल्कि भगवान का दास मानने लगे। यही कारण है कि मंदिर की संपत्ति को निजी या सरकारी संपत्ति नहीं, बल्कि भगवान की अमानत माना जाता है।

मंदिर की स्थापत्य कला भी इसके रहस्य को और गहराती है। केरल और द्रविड़ स्थापत्य शैली के मिश्रण से बना यह मंदिर केवल देखने में ही भव्य नहीं, बल्कि इसकी संरचना में गहरे आध्यात्मिक और खगोलीय संकेत भी छिपे हुए माने जाते हैं। गर्भगृह, गलियारे और तहखानों की स्थिति इस तरह बनाई गई है कि वहां ऊर्जा का प्रवाह विशेष रूप से केंद्रित होता है। कुछ विद्वान मानते हैं कि सातवें द्वार के पीछे ऐसी संरचना हो सकती है, जो किसी विशेष ऊर्जा संतुलन को बनाए रखने के लिए बनाई गई हो।

आधुनिक दृष्टिकोण रखने वाले लोग इस पूरे विषय को अंधविश्वास से जोड़कर देखते हैं। उनके अनुसार, सातवें द्वार को न खोलना केवल भय और रहस्यवाद को बढ़ावा देता है। वे मानते हैं कि यदि वहां खजाना है, तो उसे संरक्षित कर राष्ट्रहित में उपयोग किया जाना चाहिए। लेकिन इस सोच का विरोध करने वाले यह तर्क देते हैं कि हर चीज को आधुनिक तर्क के तराजू पर तौलना उचित नहीं। कुछ धरोहरें आस्था के लिए होती हैं, न कि उपयोग के लिए।

आज की स्थिति यह है कि पद्मनाभस्वामी मंदिर का सातवां द्वार बंद है और शायद यही इसका सबसे बड़ा रहस्य है। यह द्वार मानो यह प्रश्न खड़ा करता है कि क्या हर रहस्य को उजागर करना जरूरी है, या कुछ रहस्यों का रहस्य बने रहना ही मानव सभ्यता के लिए बेहतर है। यह द्वार हमें यह भी सिखाता है कि विज्ञान और आस्था के बीच संतुलन बनाए रखना कितना कठिन और आवश्यक है।

अंततः पद्मनाभस्वामी मंदिर का सातवां द्वार केवल एक बंद तहखाना नहीं, बल्कि भारतीय मानस का प्रतीक बन चुका है। यह उस आस्था का प्रतिनिधित्व करता है, जो तर्क से परे है, और उस भय का भी, जो अज्ञात से जुड़ा होता है। शायद इसी कारण दुनिया आज भी इस द्वार से डरती है—क्योंकि इसके पीछे केवल सोना-चांदी नहीं, बल्कि हमारी परंपराओं, विश्वासों और सीमाओं की सच्चाई छिपी हुई है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में विकास, विश्वास और विजन के साथ नव वर्ष की विकास भरी शुरुआत : वीरमगाम विधानसभा क्षेत्र में विभिन्न परियोजनाओं का शिलान्यास

- वीरमगाम, देत्रोज और मांडल तहसीलों को 497 करोड़ रुपए के विभिन्न विकास कार्यों की सौगात
- कभी संसाधनों की कमी, वर्षा आधारित खेती और रोजगार के लिए युवाओं के पलायन के लिए जाना जाने वाला मांडल, वीरमगाम और बेचराजी क्षेत्र प्रधानमंत्री के विकास विजन से स्पेशल इन्वेस्टमेंट रीजन-ऑटो हब बन गया है : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

(जीएनएस)। : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने वर्ष 2026 के पहले दिन गुरुवार को वीरमगाम विधानसभा क्षेत्र के रोड इंफ्रास्ट्रक्चर, रेलवे और ओवरब्रिज सहित 497 करोड़ रुपए के विकास कार्यों का शिलान्यास किया।

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि कभी संसाधनों की कमी, वर्षा आधारित खेती और रोजगार के लिए युवाओं के पलायन जैसी विकट स्थिति से जूझता मांडल, बेचराजी और वीरमगाम क्षेत्र आज प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विकास विजन से स्पेशल इन्वेस्टमेंट रीजन (एसआईआर) और ऑटो हब बन गया है।

इस संदर्भ में श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व ने अंतिम व्यक्ति के हित के संकल्प और 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' के मंत्र से विकास की चरम सीमा का उदाहरण पेश किया है।

उन्होंने कहा कि विकास की राजनीति का जो दृष्टिकोण प्रधानमंत्री ने अपनाया है, उसे अब सभी ने स्वीकार कर लिया है और बिहार के हाल ही में हुए चुनाव के परिणाम इसका आदर्श उदाहरण हैं।

मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि गुजरात में पिछले ढाई दशक से अधिक समय से श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में इंफ्रास्ट्रक्चर कनेक्टिविटी सहित जो विकास कार्य डबल इंजन सरकार की गति से हुए हैं, उससे गुजरात देश के विकास का ग्रोथ इंजन बन गया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि कनेक्टिविटी को सुदृढ़ करने के लिए वीरमगाम-मांडल क्षेत्र में रोड और रेलवे सहित अनेक कार्य हुए हैं। पिछले तीन वर्षों में ही मांडल-बेचराजी एसआईआर को जोड़ने वाली सड़कों और पुलों के 488 करोड़ रुपए के कार्य पूरे हुए हैं। एसआईआर से जुड़ने वाले हाईवे, परिवहन में बुनियादी ढांचे के विकास और फोरलेन रोड तथा रेलवे ओवरब्रिज के कारण इस क्षेत्र के विकास को नई दिशा और नई गति मिलेगी। रेलवे ओवरब्रिज का निर्माण होने से कोकता फाटक पर वर्षों से चली आ रही ट्रैफिक की समस्या खत्म होगी, जिससे लगभग 1 लाख नागरिकों के समय और ईंधन की बचत होगी।

देश में इंफ्रास्ट्रक्चर और कनेक्टिविटी परियोजनाओं की गति की चर्चा करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारतमाला परियोजना के अंतर्गत विभिन्न एक्सप्रेस-वे, कॉरिडोर और रणनीतिक पुलों एवं सुरंगों के कार्य पूरे किए गए हैं। जहां 2014 से पहले रोजाना 12 किमी नेशनल हाईवे का निर्माण किया जाता था, वहीं आज रोजाना 34 किमी नेशनल हाईवे बन रहे हैं। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार ने भी नमो शक्ति एक्सप्रेस-वे और 1155 किमी के 12 गरवी गुजरात हाईस्पीड कॉरिडोर के लिए 10,000 करोड़ रुपए आवंटित किए हैं।

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर नागरिकों से अपील की कि जब इतने बड़े पैमाने पर औद्योगिक विकास हो रहा हो, तब हमें भी स्वच्छता पर विशेष जोर देना चाहिए और स्वच्छता लोगों का सहज स्वभाव बनना चाहिए।

इस अवसर पर वीरमगाम के विधायक श्री हार्दिक पटेल ने कहा कि मुख्यमंत्री ने आज अनेक विकास कार्यों का शिलान्यास किया है, जिनका लाभ स्थानीय क्षेत्र सहित शंखेश्वर और बेचराजी के श्रद्धालुओं को मिलेगा। उन्होंने आगे कहा कि पिछले तीन वर्षों में वीरमगाम विधानसभा क्षेत्र को 2500 करोड़ रुपए से अधिक विकास के कार्य मिले हैं।

विधायक श्री पटेल ने क्षेत्र के समग्र विकास के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में सरकार द्वारा इस बात की चिंता की गई है कि विकास से कोई भी वंचित न रह जाए। इस मौके पर सुपोषित गुजरात अभियान के तहत मुख्यमंत्री ने आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को मिलेट बास्केट वितरित किए। सड़क एवं भवन विभाग के मुख्य अभियंता ने स्वागत भाषण दिया।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने वीरमगाम विधानसभा क्षेत्र की जिन विकास परियोजनाओं का शिलान्यास किया उनमें वीरमगाम नगर पालिका से मांडल-दसाड़ा रोड का 285 करोड़ रुपए का कार्य, वीरमगाम शहर के रैयापुर ओवरब्रिज का 91 करोड़ रुपए का कार्य, मांडल तहसील के विठ्ठलापुर से देत्रोज-कड़ी रोड के रिसर्फेसिंग का 55 करोड़ रुपए का कार्य, वीरमगाम तहसील के थोरी मुबारक से लीया-वांसवा रोड का 39 करोड़ रुपए का कार्य, करकथल-हांसलपुर रोड का 12 करोड़ रुपए का कार्य, देत्रोज नए सर्किट हाउस का 5 करोड़ रुपए का कार्य, वीरमगाम नए सर्किट हाउस का 5 करोड़ रुपए कार्य, देत्रोज सब रजिस्ट्रार कार्यालय का 2.45 करोड़ रुपए का कार्य तथा वीरमगाम तहसील के सचाणा बाइपास रोड के 3 करोड़ रुपए के कार्य सहित विभिन्न विकास कार्य शामिल हैं।

कार्यक्रम में जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती कंचनबा वाघेला, जिला कलेक्टर श्री सुजीत कुमार, जिला विकास अधिकारी श्री विदेह खरे, जिला पुलिस अधीक्षक श्री ओम प्रकाश जाट, अग्रणी श्री शैलेषभाई दावड़ा, सड़क एवं भवन विभाग के मुख्य अभियंता एवं विशेष सचिव श्री जे.ए. गांधी, तहसील पंचायतों के अध्यक्ष, वीरमगाम नगर पालिका अध्यक्ष, पालिका एवं तहसील पंचायत के सदस्य, पूर्व विधायक और सामाजिक एवं राजनीतिक अग्रणियों सहित बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित रहे।

पश्चिम रेलवे के निर्माण विभाग अहमदाबाद में खेमराज मीना ने जनसंपर्क अधिकारी का कार्यभार ग्रहण किया

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के निर्माण विभाग, अहमदाबाद में दिनांक 01 जनवरी 2026 को श्री खेमराज मीना ने जनसंपर्क अधिकारी (PRO) के पद का कार्यभार ग्रहण किया।

कार्यभार ग्रहण करने से पूर्व खेमराज मीना पश्चिम रेलवे रतलाम मंडल के इंदौर में जनसंपर्क अधिकारी के रूप में कार्यरत थे।

इससे पूर्व मीना पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल तथा दक्षिण रेलवे के तिरुवनंतपुरम मंडल में भी जनसंपर्क अधिकारी के पद पर अपनी सेवाएँ दे चुके हैं।

शैक्षणिक योग्यता के रूप में खेमराज मीना ने भारतीय जन संचार संस्थान (IIMC) से पत्रकारिता में डिप्लोमा प्राप्त किया है। उनके अनुभव एवं कार्यकुशलता से पश्चिम रेलवे के निर्माण विभाग के जनसंपर्क कार्यों को नई दिशा मिलेगी।

पश्चिम रेलवे की कुछ ट्रेनें वसई रोड स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट/शॉर्ट ओरिजिनेट होंगी

महत्वपूर्ण इंफ्रास्ट्रक्चर के अपग्रेडेशन हेतु कुछ ट्रेनों के लिए अस्थायी परिवर्तन

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा बोरीवली–कांदिवली के बीच 5वीं एवं 6वीं रेलवे लाइन के निर्माण कार्य से संबंधित आवश्यक नॉन-इंटरलॉकिंग (NI) कार्य को सुचारु रूप से संपन्न करने हेतु कुछ मेल/एक्सप्रेस ट्रेन सेवाओं के अस्थायी नियमन की योजना बनाई गई है। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, दो मेल/एक्सप्रेस ट्रेनें - ट्रेन संख्या 19426 नंदुरबार–बोरीवली एक्सप्रेस तथा ट्रेन संख्या 19418 अहमदाबाद–बोरीवली एक्सप्रेस को 17 जनवरी, 2026 तक वसई रोड स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट किया जाएगा।

इसी प्रकार, दो मेल/एक्सप्रेस ट्रेनें - ट्रेन संख्या 19425 बोरीवली–नंदुरबार एक्सप्रेस तथा ट्रेन संख्या 19417 बोरीवली–अहमदाबाद एक्सप्रेस को 18 जनवरी, 2026 तक वसई रोड स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट किया जाएगा।

इस संबंध में विस्तृत जानकारी संबंधित स्टेशन अधीक्षकों के पास उपलब्ध है। यात्रियों से अनुरोध है कि वे उपर्युक्त परिवर्तनों को ध्यान में रखें तथा उसी के अनुसार अपनी यात्रा की योजना बनाएँ।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने मांडल के खंभलाय माताजी मंदिर में दर्शन-पूजन कर धन्यता का अनुभव किया

(जीएनएस)। गांधीनगर : नव वर्ष के शुभारंभ के अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गुरुवार को मांडल तहसील में स्थित खंभलाय माताजी मंदिर में विधिवत रूप से दर्शन कर पूजा-अर्चना की।

इस अवसर पर उन्होंने क्षेत्र सहित राज्य की सुख-समृद्धि, शांति और कल्याण के लिए प्रार्थना की और आत्मिक धन्यता का अनुभव किया। इस दौरान पूरा वातावरण भक्तिभाव एवं आध्यात्मिक ऊर्जा से सराबोर हो उठा।

उल्लेखनीय है कि खंभलाय माताजी मंदिर भक्ति, विश्वास और परंपरा के प्रतीक के साथ ही जनमानस की आस्था से जुड़ा हुआ शक्ति साधना का एक पवित्र स्थान है।

दर्शन-पूजन के दौरान विधायक श्री हार्दिक पटेल सहित मंदिर के न्यासीगण, स्थानीय अग्रणी और भक्तजन उपस्थित रहे।

भारतीय रेल का राष्ट्र को नव वर्ष का उपहार: गुवाहाटी और हावड़ा के बीच पहली वंदे भारत स्लीपर ट्रेन

(जीएनएस)। रेल, सूचना एवं प्रसारण, इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री, श्री अश्विनी वैष्णव ने आज नई दिल्ली के रेल भवन में आयोजित बैठक में नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए घोषणा की कि असम के गुवाहाटी और पश्चिम बंगाल के हावड़ा के बीच पहली वंदे भारत स्लीपर ट्रेन का संचालन शुरू होगा। उन्होंने बताया कि वंदे भारत स्लीपर ट्रेन का संपूर्ण परीक्षण, जांच और प्रमाणीकरण सफलतापूर्वक संपन्न हो चुका है। जनवरी माह में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी इस मार्ग पर पहली वंदे भारत स्लीपर ट्रेन को हरी झंडी दिखाएंगे। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि यह उपलब्धि भारतीय रेल, राष्ट्र और इसके रेल यात्रियों के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। उन्होंने यह भी बताया कि 2026 में कई यात्री-केंद्रित पहल शुरू की जाएंगी और यह भारतीय रेल के लिए बड़े सुधारों वाला वर्ष होगा।

वंदे भारत स्लीपर ट्रेन से असम राज्य के कामरूप महानगरपालिका और बोंगाई गांव और पश्चिम बंगाल के कूच बिहार, जलपाईगुड़ी, मालदा, मुर्शिदाबाद, पूर्वी बर्धमान, हुगली और हावड़ा जैसे जिलों को लाभ मिलेगा। ट्रेन में 16 कोच होंगे, इनमें 11 थ्री-टियर एसी कोच, 4 टू-टियर एसी कोच और 1 फर्स्ट-क्लास एसी कोच शामिल हैं। इसकी कुल क्षमता लगभग 823 यात्रियों की होगी।

श्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि पूरी तरह से नए सस्पेंशन वाली एक नई बोगी विकसित की गई है। डिजाइन के मानकों को नए स्तर पर ले जाया गया है। इसके आंतरिक भाग और सीढ़ियां एर्गोनॉमिक डिजाइन पर आधारित हैं, और सुरक्षा के लिए विशेष मापदंड लागू किए गए हैं। वंदे भारत स्लीपर ट्रेन रात्रिकालीन यात्राओं के लिए आरामदायक, सुरक्षित और उच्च गुणवत्ता का अनुभव प्रदान करेगी। वंदे भारत स्लीपर ट्रेन की समय सारिणी इस प्रकार बनाई गई है कि यह शाम को अपने प्रस्थान स्थल से रवाना होकर अगली सुबह अपने गंतव्य पर पहुंचेगी।

वंदे भारत स्लीपर ट्रेन में यात्रियों को क्षेत्र विशेष व्यंजनों का आनंद मिलेगा। गुवाहाटी से शुरू होने वाली ट्रेन में प्रामाणिक असमिया व्यंजन परोसे जाएंगे, जबकि कोलकाता से शुरू होने वाली ट्रेन में पारंपरिक बंगाली व्यंजन परोसे जाएंगे। इससे रेल में आनंददायक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध भोजन मिलना सुनिश्चित होगा।

वंदे भारत स्लीपर ट्रेन की विशेषताएं:

- 180 किमी प्रति घंटे तक की गति वाली सेमी-हाई-स्पीड ट्रेन
- बेहतर तकिए के साथ एर्गोनॉमिक (ऐसे उत्पाद, जो आरामदायक, सुरक्षित और कुशल हों) रूप से डिज़ाइन किए गए बर्थ
- सुगम आवागमन के लिए प्रवेश द्वारों सहित स्वचालित दरवाजे
- बेहतर सस्पेंशन और शोर कम करने की क्षमता के साथ बेहतर यात्रा का आनंद लें।

कवच से सुसज्जित

- उच्च स्वच्छता बनाए रखने के लिए कीटाणुनाशक तकनीक
- उन्नत नियंत्रण और सुरक्षा प्रणालियों से सुसज्जित ड्राइवर केबिन
- वायुगतिकीय बाहरी बनावट और स्वचालित बाहरी यात्री दरवाजे

दिव्यांगजनों के लिए विशेष व्यवस्था

- आपातकालीन स्थिति में यात्री और ट्रेन प्रबंधक/लोको पायलट के बीच संचार के लिए आपातकालीन टॉक-बैक यूनिट।
- सभी कोचों में सीसीटीवी कैमरे लगे हैं।
- विद्युत कैबिनेट और शौचालयों में एरोसोल आधारित अग्नि पहचान और शमन प्रणाली से अग्नि सुरक्षा में सुधार हुआ है।
- पहली वंदे भारत स्लीपर ट्रेन भारतीय रेल के एक नए युग की शुरुआत है। यह रात भर की यात्रा के लिए गति, आराम और आधुनिक सुविधाओं का संगम है। यह भारतीय रेल की यात्री-केंद्रित सेवाओं, तकनीकी नवाचार और क्षेत्रीय संपर्क पर केंद्रित प्रतिबद्धता को दर्शाती है और यात्रियों को एक सुरक्षित, तेज, सुविधाजनक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध यात्रा प्रदान करती है।

रेलवन ऐप से अनारक्षित टिकट बुकिंग पर यात्रियों को मिलेगा 3% का सीधा लाभ

डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देने की दिशा में रेलवे बोर्ड की महत्वपूर्ण पहल

रेल यात्रियों को डिजिटल भुगतान के माध्यम से अनारक्षित टिकट बुकिंग के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से रेलवे बोर्ड द्वारा रेलवन (RailOne) ऐप पर अनारक्षित टिकट बुकिंग पर 3 प्रतिशत लाभ प्रदान करने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया है।

वर्तमान में रेलवन ऐप पर आर-वॉलेट (R-Wallet) के माध्यम से अनारक्षित टिकट बुक करने पर यात्रियों को 3 प्रतिशत बोनस कैशबैक की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। इस सुविधा को और अधिक व्यापक बनाते हुए रेलवे बोर्ड ने यह निर्णय लिया है कि अब आर-वॉलेट के अतिरिक्त सभी डिजिटल भुगतान माध्यमों—जैसे यूपीआई, डेबिट/क्रेडिट कार्ड आदि—से रेलवन ऐप पर अनारक्षित टिकट बुक करने पर यात्रियों को टिकट मूल्य पर 3 प्रतिशत की छूट प्रदान की जाएगी। हालांकि, आर-वॉलेट के माध्यम से टिकट बुकिंग की स्थिति में पूर्व की भांति 3 प्रतिशत बोनस कैशबैक की सुविधा जारी रहेगी।

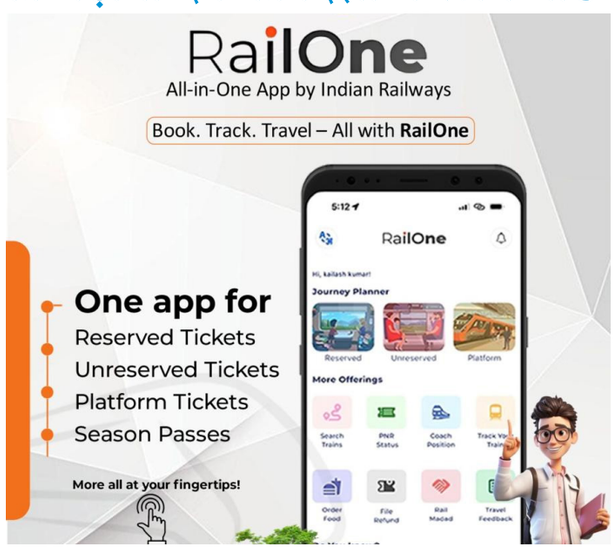

रेलवे बोर्ड द्वारा घोषित यह 3 प्रतिशत छूट/लाभ योजना 14 जनवरी 2026 से 14 जुलाई 2026 तक प्रभावी रहेगी। इस अवधि के दौरान योजना के प्रभाव का फीडबैक के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा तथा आगे की कार्रवाई पर निर्णय लिया जाएगा।

रेलवे बोर्ड की यह पहल यात्रियों को डिजिटल भुगतान अपनाने के लिए प्रोत्साहित करेगी तथा अनारक्षित टिकट बुकिंग की प्रक्रिया को और अधिक सरल, तेज, सुविधाजनक एवं पारदर्शी बनाएगी। डिजिटल माध्यमों से टिकट बुकिंग करने पर यात्रियों को न केवल समय की बचत होगी, बल्कि उन्हें प्रत्यक्ष आर्थिक लाभ भी प्राप्त होगा।

पीएनजी ज्वेलर्स ने लाइटस्टाइल बाय पीएनजी के साथ विकास के अगले पड़ाव को गति दी, सारा तेंदुलकर को ब्रांड एंबेसडर नियुक्त किया

(जीएनएस)। पुणे: पीएनजी ज्वेलर्स के समकालीन हल्के वजन वाले उत्तम आभूषण ब्रांड लाइटस्टाइल बाय पीएनजी ने सारा तेंदुलकर को अपना ब्रांड एंबेसडर घोषित किया है. यह कदम भारत के भविष्य के ज्वेलरी उपभोक्ताओं से ब्रांड के जुड़ाव को और मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है.

यह साझेदारी पीएनजी ज्वेलर्स के पुराने ग्राहकों और भविष्य के ग्राहकों के बीच एक धोरणात्मक सेतु के रूप में लाइटस्टाइल की भूमिका को और मजबूत करती है. पीएनजी ज्वेलर्स लगभग दो सदियों से पीढ़ियों से एक विश्वसनीय नाम रहा है, वहीं लाइटस्टाइल को विशेष रूप से आधुनिक रिटेल प्रारूप, समकालीन डिजाइन भाषा और एक सर्वव्यापी अनुभव के माध्यम से अगली पीढ़ी के लिए प्रासंगिक बने रहने के लिए सोच-समझकर तैयार किया गया है.

लाइटस्टाइल के पीछे की व्यापक सोच के बारे में बात करते हुए, पीएनजी ज्वेलर्स के अध्यक्ष और व्यवस्थापकीय संचालक डॉ. सौरभ गाडगीळ ने कहा, "लाइफस्टाइल बाय पीएनजी हमारे मौजूदा ग्राहकों और भविष्य के ग्राहकों के जोड़ने का एक अच्छा और दीर्घकालिक प्रयास है. पीएनजी ने पीढ़ियों से विश्वास संपादन किया है, लेकिन हमारे लिए यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि हम आज के युवा उपभोक्ताओं की सोच, खरीदारी और अभिव्यक्ति के तरीके के अनुरूप बने रहें. लाइफस्टाइल को एक आधुनिक रिटेल फॉर्मेट के रूप में बनाया गया है, जिसमें मजबूत ओमनीचैनल उपस्थिति है और इसे केवल पारंपरिक अवसरों तक सीमित न रखकर रोज के पलों को ध्यान में रखकर डिज़ाइन किया गया है. यह कोई शार्ट टर्म स्टाइल पहल नहीं है, बल्कि पीएनजी के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक क्षेत्र है, जिसमें मर्चेंडाइजिंग, प्लानिंग, मार्केटिंग और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर विशेष ध्यान दिया गया है. हमारे पायलट स्टोर्स को मिली उत्साहजनक प्रतिसाद ने हमें प्रमुख बाजारों में ब्रांड को संरचित तरीके से विस्तार करने का आत्मविश्वास दिया है."

सारा तेंदुलकर की स्वाभाविक शालीनता, आधुनिक दृष्टिकोण और मजबूत डिजिटल जुड़ाव उन्हें ब्रांड की विचारधारा के लिए एकदम उपयुक्त बनाते हैं. इंस्टाग्राम पर 8.9 मिलियन से अधिक फॉलोअर्स के साथ, उन्हें उनकी आकर्षक स्टाइल, प्रामाणिकता और संतुलित व्यक्तिमत्व के लिए व्यापक रूप से पहचाना जाता है. उत्कृष्ट डिझाइन, सादगीपूर्ण और आराम को प्राथमिकता देने वाले फैशन के प्रति उनकी पसंद, लाइटस्टाइल के डिजाइन सिद्धांतों के साथ पूरी तरह से मेल खाती है.

इस साझेदारी पर टिप्पणी करते हुए सारा तेंदुलकर ने कहा, "लाइटस्टाइल सहजता और व्यक्तित्व की भावना को दर्शाता है, जो मुझे बहुत स्वाभाविक लगता है. इसकी ज्वेलरी हल्की, सोच-समझकर डिज़ाइन की गई है और रोज़ की ज़िंदगी के लिए उपयुक्त है, जिससे यह साझेदारी मेरे लिए वास्तव में रोमांचक बन जाती है."

इसी बात को आगे बढ़ाते हुए, लाइटस्टाइल बाय पीएनजी के मार्केटिंग और ई-कॉमर्स प्रमुख हेमंत चव्हाण ने कहा, "सारा उन युवा महिला की सोच का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिनके लिए लाइटस्टाइल बनाया गया है - आत्मविश्वास से भरपूर, आधुनिक और अपने तरीके से अभिव्यक्त. युवा दर्शकों के साथ सहजता से जुड़ने की उनकी क्षमता, लाइटस्टाइल की उस महत्वाकांक्षा को मजबूत करती है कि वह भविष्य के उन उपभोक्ताओं के लिए पसंदीदा ज्वेलरी डेस्टिनेशन बने जो डिज़ाइन, सहजता और प्रामाणिकता को महत्व देते हैं".

ब्रांड एंबेसडर के रूप में, सारा तेंदुलकर ब्रांड और कलेक्शन अभियानों में नज़र आएंगी, डिजिटल पहलों, मीडिया इंटरैक्शन में भाग लेंगी और प्रमुख स्टोर लॉन्च में शामिल होंगी. इसके अलावा वह चुनिंदा कलेक्शन के लिए स्टाइल म्यूज़ के रूप में भी काम करेंगी. दो साल की यह साझेदारी दिसंबर 2025 में शुरू होगी, और सारा के साथ डिज़ाइन किए गए कलेक्शन मार्च 2026 से लॉन्च किए जाने की योजना है.

लाइफस्टाइल बाय पीएनजी एक स्वतंत्र बिज़नेस वर्टिकल के रूप में काम करता है, जो उन महिलाओं को ध्यान में रखकर बनाया गया है जो पारंपरिक या त्योहारों के अलावा भी आभूषण खरीदती हैं, चाहे वह स्वयं के लिए हो, गिफ्टिंग हो या रोज के पलों के लिए. यह ब्रांड एक सशक्त ओमनीचैनल दृष्टिकोण अपनाता है जो भौतिक स्टोर, डिजिटल प्लेटफॉर्म और कंटेंट आधारित एंगेजमेंट को एकीकृत करता है.

पुणे और गोवा में पायलट स्टोरों से मिली उत्साहजनक प्रतिसाद के बाद, लाइटस्टाइल अब सुनियोजित विस्तार के लिए तैयार है. ब्रांड का लक्ष्य वित्त वर्ष 2028 तक लगभग 50 स्टोर्स तक विस्तार करना है, जिसमें कंपनी के स्वामित्व और फ्रेंचाइजी के दोनों प्रारूप शामिल होंगे, साथ ही एक ऑनलाइन स्टोर और ऐप भी होगा. विस्तार का प्रारंभिक चरण महाराष्ट्र पर केंद्रित होगा, जिसके बाद भारत के अन्य हिस्सों में विस्तार किया जाएगा.

2025 में ऑटो बाजार ने पकड़ी रफ्तार, रिकॉर्ड बिक्री से लौटा उद्योग का भरोसा

(जीएनएस)। नई दिल्ली। वर्ष 2025 भारतीय ऑटोमोबाइल उद्योग के लिए एक नई उम्मीद और मजबूती का साल बनकर उभरा। बीते कुछ वर्षों की सुस्ती और अनिश्चितताओं के बाद इस साल ऑटो बाजार ने जिस तरह रफ्तार पकड़ी, उसने न सिर्फ कंपनियों के चेहरे पर मुस्कान लौटाई, बल्कि अर्थव्यवस्था में भी सकारात्मक संकेत दिए। जीएसटी में कटौती, ब्याज दरों में स्थिरता, ग्रामीण और शहरी मांग में सुधार तथा नए मॉडलों की लॉन्चिंग ने मिलकर ऑटो सेक्टर को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। साल के अंतिम महीने दिसंबर में आई जोरदार बिक्री ने पूरे वर्ष के आंकड़ों को रिकॉर्ड स्तर पर पहुंचा दिया।

यात्री और यूटिलिटी वाहनों की मांग में पूरे साल मजबूती बनी रही। खास तौर पर एसयूवी और कॉम्पैक्ट यूटिलिटी वाहनों की बढ़ती लोकप्रियता ने बाजार को नई दिशा दी। उपभोक्ताओं की बदलती पसंद, बेहतर फाइनेंस विकल्प और त्योहारों के सीजन में बढ़ी खरीदारी ने कंपनियों को भरपूर फायदा पहुंचाया। जीएसटी में कटौती का असर सीधे कीमतों पर पड़ा, जिससे गाड़ियों की खरीद अपेक्षाकृत सस्ती हुई और मांग को बल मिला।

देश की सबसे बड़ी कार निर्माता मारुति सुजुकी इंडिया के लिए 2025 बेहद सफल साबित हुआ। कंपनी ने दिसंबर 2025 में कुल बिक्री में 22 प्रतिशत से अधिक की बढ़ोतरी दर्ज करते हुए 2.17 लाख से ज्यादा वाहनों की बिक्री की। घरेलू बाजार में यात्री वाहनों की मजबूत मांग ने इस बढ़त में अहम भूमिका निभाई। खासकर छोटे और मिड-सेगमेंट की कारों के साथ-साथ यूटिलिटी वाहनों की बिक्री में भी उल्लेखनीय उछाल देखने को मिला। हालांकि, वैश्विक परिस्थितियों और कुछ बाजारों में मांग कमजोर रहने के चलते निर्यात में गिरावट दर्ज की गई, लेकिन घरेलू बिक्री ने इसकी भरपाई कर दी।

किआ इंडिया ने भी 2025 में शानदार प्रदर्शन किया। दिसंबर माह में कंपनी की बिक्री दोगुने से अधिक रही, जिसने साल के अंत में उसकी स्थिति को और मजबूत कर दिया। पूरे वर्ष की बात करें तो किआ की कुल बिक्री में करीब 15 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज हुई। कंपनी के एसयूवी और प्रीमियम सेगमेंट के मॉडल्स को ग्राहकों से अच्छी प्रतिक्रिया मिली, जिससे किआ ने भारतीय बाजार में अपनी पकड़ और मजबूत की।

महिंद्रा एंड महिंद्रा के लिए भी 2025 उपलब्धियों भरा रहा। कंपनी ने दिसंबर में 25 प्रतिशत की सालाना वृद्धि के साथ 86 हजार से अधिक वाहनों की बिक्री की। घरेलू यात्री वाहन खंड में महिंद्रा की मजबूत मौजूदगी पहले से और सशक्त हुई। खासकर एसयूवी सेगमेंट में कंपनी के नए और अपडेटेड मॉडल्स ने ग्राहकों को आकर्षित किया। ग्रामीण इलाकों में ट्रैक्टर और यूटिलिटी वाहनों की स्थिर मांग ने भी कंपनी के कुल प्रदर्शन को सहारा दिया।

जेएसडब्ल्यू एमजी मोटर इंडिया ने भी 2025 में संतुलित और मजबूत वृद्धि दर्ज की। कंपनी की कुल बिक्री 19 प्रतिशत बढ़कर 70 हजार से अधिक इकाई तक पहुंच गई। इस सफलता में आईसीई वाहनों के साथ-साथ इलेक्ट्रिक सेगमेंट का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। इलेक्ट्रिक वाहनों के प्रति बढ़ती जागरूकता और सरकारी प्रोत्साहन ने एमजी मोटर को नए ग्राहकों तक पहुंचने में मदद की।

स्कोडा ऑटो इंडिया के लिए 2025 ऐतिहासिक साबित हुआ। कंपनी की बिक्री दोगुने से अधिक बढ़कर 72,665 इकाई पर पहुंच गई, जो भारत में उसका अब तक का सर्वश्रेष्ठ वार्षिक प्रदर्शन माना जा रहा है। नए मॉडल्स की लॉन्चिंग, बेहतर सर्विस नेटवर्क और आक्रामक मार्केटिंग रणनीति ने स्कोडा को प्रीमियम सेगमेंट में नई पहचान दिलाई।

कुल मिलाकर वर्ष 2025 में भारतीय ऑटोमोबाइल उद्योग ने मजबूती और स्थिरता का परिचय दिया। मांग में सुधार, नीतिगत समर्थन और उपभोक्ता विश्वास की वापसी ने सेक्टर को नई ऊर्जा दी है। उद्योग विशेषज्ञों का मानना है कि यह रुझान नए साल में भी जारी रह सकता है। अगर आर्थिक हालात अनुकूल रहे और नीतिगत समर्थन बना रहा, तो 2026 ऑटो सेक्टर के लिए और भी बेहतर संभावनाएं लेकर आ सकता है।

पश्चिमी रेलवे

निर्माण कार्य

डिविजनल रेलवे मेनेजर (WA), पश्चिमी रेलवे, छठी मंजिल, इंजीनियरिंग विभाग, मुंबई सेंट्रल, मुंबई 400 008, ई-टेंडर नोटिस संख्या: BCT/25-26/292, दिनांक 29.12.2025 आमंत्रित करते हैं। कार्य और स्थान: विरार-जोरावासन सेक्शन - 1. इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग के साथ इनडोर सिग्नलिंग उपकरण को बदलने के संबंध में भिलाड में EI बिल्डिंग का निर्माण। 2. वलसाड में G+1 सिग्नल स्टोर बिल्डिंग का निर्माण। 3. RPF पोस्ट-B L पर शेड की मरम्मत और नवीनीकरण। (इलेक्ट्रिक (P) कार्यों सहित समग्र टेंडर)। कार्य की अनुमानित लागत: ₹ 8,14,71,972.89 रुपये। EMD: ₹ 5,57,400/-। जमा करने की तारीख और समय: दि. 23.01.2026 के 15:00 बजे तक। खोलने की तारीख और समय: दि. 23.01.2026 को 15:30 बजे। अधिक जानकारी के लिए कृपया हमारी वेबसाइट www.ireps.gov.in पर जाएं

0960

हमें लाइक करें: facebook.com/WesternRly

अहमदाबाद इंटरनेशनल फ्लावर शो–2026

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने 'भारत एक गाथा' थीम के साथ 14वें इंटरनेशनल फ्लावर शो का शुभारंभ कराया

ऊर्जा राज्य मंत्री श्री ऋषिकेश पटेल तथा शहरी विकास राज्य मंत्री श्रीमती दर्शनाबेन वाघेला की प्रेरक उपस्थिति

▸▸ लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल के राष्ट्रीय एकता में योगदान को सम्मानित करने वाला विश्व का सबसे बड़ा फूलों से बना चित्र गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड के लिए तैयार कराया गया

▸▸ मुख्यमंत्री के करकमलों से 'नारी सशक्तिकरण' थीम पर तैयार किए गए स्कल्पचर का भी अनावरण कराया गया

▸▸ यूनेस्को द्वारा घोषित 'विश्व की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर – दिवाली' पर विशेष कृति प्रस्तुत की गई

▸▸ फूल, कला और कल्पना के संगम से भारत के इतिहास, संस्कृति, उपलब्धियों और भावनाओं को एक ही मंच पर प्रस्तुत किया गया

▸▸ 22 जनवरी 2026 तक फ्लावर शो- 2025 की मुलाकात ले सकेंगे

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गुरुवार को साबरमती रिवरफ्रंट पर 'अहमदाबाद इंटरनेशनल फ्लावर शो–2026' का शुभारंभ किया। 'भारत एक गाथा' थीम पर इंटरनेशनल फ्लावर शो के 14वें संस्करण का आयोजन किया गया है। भारत की समृद्ध, विविधतापूर्ण और गौरवशाली संस्कृति को प्रस्तुत करने वाले इस भव्य उत्सव का आगामी 22 जनवरी तक आनंद लिया जा सकेगा।

इस अवसर पर ऊर्जा राज्य मंत्री श्री ऋषिकेशभाई पटेल तथा शहरी विकास राज्य मंत्री श्रीमती दर्शनाबेन वाघेला भी उपस्थित रहे। 'अहमदाबाद इंटरनेशनल फ्लावर शो–2026' के शुभारंभ के बाद मुख्यमंत्री सहित सभी अतिथियों ने फ्लावर शो के विभिन्न जोनों का अवलोकन किया और विभिन्न आकर्षणों को देखा। साथ ही, सभी ने अनेक प्रकार के फूलों से बने स्कल्पचर की सराहना की। इस प्रदर्शनी में 'नारी सशक्तिकरण' थीम पर तैयार किए गए स्कल्पचर का भी मुख्यमंत्री के करकमलों से अनावरण किया गया। इसके अतिरिक्त, यहाँ लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल के राष्ट्रीय एकता में दिए गए योगदान को सम्मानित करने वाला विश्व का सबसे बड़ा फूलों से बना स्कल्पचर गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड के लिए तैयार किया गया है। साथ ही, यूनेस्को द्वारा घोषित 'विश्व की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर – दिवाली' पर विशेष कृति भी प्रमुख आकर्षण का केंद्र रहेगी। उल्लेखनीय है कि प्रदर्शनी के विभिन्न जोन भारत के अलग-अलग आयामों को उजागर करेंगे, जिनमें प्राचीन ज्ञान, उत्सवों का उल्लास, कलात्मक तेजस्विता और आधुनिक विकास की गाथा शामिल है। आगंतुक एक जोन से दूसरे जोन में आगे बढ़ते हुए प्राचीन से आधुनिक भारत की सम्पूर्ण समय-यात्रा का अनुभव करे सकेंगे और 'विविधता में एकता' की भावना को नजदीक से महसूस कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त, विशेष ऑडियो गाइड भी बनाए गए हैं। फ्लावर शो में विभिन्न स्थानों पर क्यूआर कोड स्कैन कर फूलों, स्कल्पचर व जोनों से संबंधित जानकारी प्राप्त की जा सकेगी। साथ ही, सोवेनियर शॉप, नर्सरी, चाइल्ड केयर यूनिट और फूड स्टॉल भी आगंतुकों के आकर्षण का केंद्र रहेंगे। जन भागीदारी से आयोजित इस फ्लावर शो में कई स्वतंत्र कॉर्पोरेट और सरकारी इकाइयां भागीदार बनी हैं। इस अवसर पर अहमदाबाद की महापौर श्रीमती प्रतिभाबेन जैन, अहमदाबाद के विधायक सर्वश्री अमित ठाकर, जीतूभाई पटेल, हर्षदभाई पटेल, उप महापौर श्री जतिनभाई पटेल, मनपा स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री देवांगभाई दाणी, महानगर पालिका आयुक्त श्री बंछानिधि पाणि, मनपा के पदाधिकारी, अधिकारी तथा कॉर्पोरेट इकाइयों के प्रतिनिधि सहित बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित रहे।

इंटरनेशनल फ्लावर शो–2026 के प्रमुख आकर्षण

▸▸ भारत की पौराणिक धरोहर को प्रस्तुत करने वाला 'शाश्वत भारत' जोन और 30 मीटर व्यास का भव्य फूल मंडल फ्लावर शो का प्रमुख आकर्षक

▸▸ देश की हाई-स्पीड रेल, नवीकरणीय ऊर्जा, स्पोर्ट्स क्षेत्र की उपलब्धियों, अंतरिक्ष टेक्नॉलोजी और शिक्षा क्षेत्र की प्राप्त सफलताओं को फूलों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया

विश्व स्तरीय अहमदाबाद फ्लावर शो–2026 भारतीय संस्कृति और प्रकृति की सुंदरता का संगम प्रस्तुत करता है। इस वार्षिक रंगोत्सव में पूरे भारत से प्रकृति और संस्कृति प्रेमी सहभागी होते हैं। इतना ही नहीं, यह शो फूलों की भव्यता के साथ मानवीय कलाकारी की अनगिनत स्मृतियां भी साथ लेकर जाने का अनुभव कराता है।

यह फूल महोत्सव केवल एक प्रदर्शनी नहीं, बल्कि पर्यावरण जागरूकता तथा सस्टेनेबिलिटी के साथ ही अहमदाबाद शहर की जैवविविधता और इकोफ्रेंड्ली सिस्टम को और सशक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। यह नागरिकों को पर्यावरण के प्रति जागरूक कर इस फ्लावर शो में संस्कृति और प्रकृति के संरक्षण में भागीदार बनने के लिए प्रेरित करता है।

फ्लावर शो की यात्रा भव्य प्रवेश द्वार से आरंभ होगी, जहां दो विशाल फूलों से बने सिंह आगंतुकों का स्वागत करेंगे। ये सिंह भारत की वीरता, गौरव और अडिग आत्मा के प्रतीक होंगे। प्रवेश जोन में कमल

के फव्वारों द्वारा राष्ट्रीय गौरव को फूलों से सजाकर प्रस्तुत किया जाएगा, जो पूरी प्रदर्शनी की थीम के अनुरूप गौरवमय वातावरण का निर्माण करेगा।

प्रदर्शनी में भारत के विभिन्न उत्सवों को समर्पित विशेष जोन भी तैयार किए गए हैं। यहां फूलों की कला के माध्यम से दिवाली के प्रकाश, आशा के संदेश, होली के रंग और उल्लास, ओणम की परंपरागत सौम्यता और बिहू के लयबद्ध उत्सवों को जीवंत स्वरूप में प्रस्तुत किया जाएगा। इसके साथ ही बच्चों के लिए विशेष रंगीन और आनंदमय जोन भी तैयार किया गया है, जहां कार्टून किरदारों द्वारा बच्चों के लिए मनोरंजन तथा कल्पना के विश्व का निर्माण किया जाएगा।

आगंतुकों की सुविधा हेतु चार विशेष प्रवेश द्वार

▸▸ गेट नंबर 1 – फ्लावर पार्क, एलिसब्रिज के पास, रिवरफ्रंट पश्चिम

▸▸ मल्टीलेवल कार पार्किंग फुटओवर ब्रिज के ऊपर से

▸▸ गेट नंबर 4 – इवेंट सेंटर, रिवरफ्रंट पश्चिम

▸▸ पूर्व प्रवेश – अटल ब्रिज का पूर्वी छोर, रिवरफ्रंट पूर्व

भारत की पौराणिक धरोहर को प्रस्तुत करने वाला 'शाश्वत भारत' जोन भी फ्लावर शो का मुख्य आकर्षक बनेगा। आध्यात्मिक रूप से समृद्ध इस जोन में समुद्र मंथन, गीता सार, गोवर्धन लीला, गंगा अवतरण और रामसेतु जैसे पौराणिक प्रसंगों को फूलों की मूर्तियों के माध्यम से कलात्मक रूप से पुनः सृजित किया गया है, जो आगंतुकों को भारत की प्राचीन सांस्कृतिक कथाओं से जोड़ते हैं।

इसके साथ ही भारतीय शास्त्रीय और लोकनृत्य परंपराओं को समर्पित जोन में कुचिपुड़ी, भांगड़ा, गरबा और कथकली जैसे नृत्य रूपों की सौम्यता प्रस्तुत की जाएगी। इस जोन के केंद्र में भगवान नटराज की प्रतिमा भारत की कलात्मक समृद्धि, परंपरा की निरंतरता और ताल की सर्वव्यापी भाषा का प्रतीक बनेगी।

आधुनिक भारत की प्रगति को दर्शाने वाला 'भारत की उपलब्धियां' जोन फूलों के माध्यम से देश की हाई-स्पीड रेल, नवीकरणीय ऊर्जा, स्पोर्ट्स क्षेत्र की उपलब्धियां, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी तथा शिक्षा क्षेत्र में प्राप्त की गई उत्कृष्टता को प्रस्तुत करेगा। यह जोन भारत की विरासत और भविष्याभिमुख नवाचार के संतुलित विकास की एक शक्तिशाली गाथा प्रस्तुत करेगा।

प्रदर्शनी का एक प्रमुख केंद्रबिंदु राष्ट्रीय एकता का प्रतीकात्मक जोन होगा, जिसमें 30 मीटर व्यास का भव्य फूल मंडल तथा सरदार वल्लभभाई पटेल का विश्व का सबसे बड़ा फूलों से बना चित्र प्रस्तुत किया जाएगा। भारत के लौह पुरुष के रूप में पहचाने जाने वाले सरदार पटेल के राष्ट्रीय एकता में दिए गए योगदान को सम्मानित करने वाली यह प्रदर्शनी गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड स्थापित करने के लिए तैयार की गई है।

अहमदाबाद महानगर पालिका द्वारा फ्लावर शो–2026 अंतर्गत साबरमती रिवरफ्रंट पर इवेंट ग्राउंड में डिसप्ले के लिए लगाए गए मौसमी पौधों की देखभाल करने के लिए ट्रैक्टर या पाइप जैसी पारंपरिक सिंचाई पद्धतियों के स्थान पर 10,524 वर्ग मीटर क्षेत्र में स्प्रिंकलर इरीगेशन नेटवर्क सिस्टम स्थापित किया गया है।

टिकट दर एवं समय

आगंतुकों के लिए सोमवार से शुक्रवार प्रवेश शुल्क 80 रुपए तथा शनिवार, रविवार और सार्वजनिक अवकाश के दिनों में प्रवेश शुल्क 100 रुपए रहेगा। इसके अतिरिक्त, सभी प्रकार के दिव्यांगजनों, सैनिकों, 12 वर्ष या उससे कम आयु के बच्चों तथा अहमदाबाद महानगर पालिका संचालित स्कूलों के विद्यार्थियों के लिए सभी दिनों में निःशुल्क प्रवेश रहेगा।

अहमदाबाद महानगर पालिका के अलावा अन्य स्कूलों के बच्चों के लिए सोमवार से शुक्रवार सुबह 9 से 1 बजे तक प्रवेश शुल्क 10 रुपए रहेगा। इसके अतिरिक्त, आगंतुकों के लिए सुबह 8 से 9 बजे तथा रात 10 से 11 बजे तक प्राइम टाइम स्लॉट में प्रवेश शुल्क 500 रुपए रहेगा।

नववर्ष की खुशियों पर टूटा कहर, बेकाबू ट्रक ने छीन ली मामा-भांजे की जिंदगी

(जीएनएस)। कानपुर। नए साल के जश्न से ठीक पहले कानपुर की सड़कों पर एक दर्दनाक हादसे ने खुशियों को मातम में बदल दिया। स्वरूप नगर थाना क्षेत्र के जीटी रोड नहरिया इलाके में देर रात हुए इस हादसे में तेज रफ्तार और अनियंत्रित ट्रक ने बाइक सवार मामा-भांजे को रौंद दिया, जिससे दोनों की मौके पर ही हालत गंभीर हो गई। उन्हें तत्काल अस्पताल ले जाया गया, लेकिन डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। एक पल में उजड़ गए परिवार की चीख-पुकार और इलाके में पसरा सन्नाटा इस त्रासदी की भयावहता को बयान करता रहा।

मृतकों की पहचान चौबेपुर थाना क्षेत्र के कंजती गांव निवासी 25 वर्षीय शिवम शर्मा और उसके मामा शिवाकांत (27) निवासी घाटमपुर के रूप में हुई है। दोनों रिश्ते में ही नहीं, बल्कि कामकाज में भी एक-दूसरे के साथी थे। वे मिलकर बेकरी का संचालन करते थे और मेहनत के दम पर अपने परिवार का सहारा बने हुए थे। नववर्ष की पूर्व संध्या पर केक और अन्य बेकरी उत्पादों की मांग अचानक बढ़ जाने के कारण दोनों देर रात सीसामऊ की ओर से आवश्यक सामग्री और ऑर्डर की डिलीवरी कर लौट रहे थे। उन्हें क्या पता था कि यह सफर उनके जीवन का आखिरी सफर साबित होगा।

रात के समय जब उनकी बाइक जीटी रोड पर हैलट अस्पताल के पास पहुंची, तभी रामादेवी की ओर से आ रहे एक तेज रफ्तार ट्रक ने अचानक नियंत्रण खो दिया और सीधे बाइक को टक्कर मार दी। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि दोनों युवक सड़क पर दूर जा गिरे। इसके बाद भी ट्रक चालक नहीं रुका, बल्कि घबराहट या लापरवाही में ट्रक को भगाने की कोशिश करता रहा और दोनों युवकों को कुचलता हुआ निकल गया। कुछ ही पलों में सड़क पर खून फैल गया और आसपास मौजूद लोग दहशत में आ गए।

हादसे के तुरंत बाद इलाके में अफरा-तफरी मच गई। राहगीरों और स्थानीय लोगों ने घायलों को बचाने की कोशिश की और पुलिस को सूचना दी। पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों युवकों को आनन-फानन में नजदीकी अस्पताल भिजवाया गया, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। डॉक्टरों ने जांच के बाद दोनों को मृत घोषित कर दिया। अस्पताल परिसर में जैसे ही यह खबर पहुंची, वहां मौजूद लोगों की आंखें नम हो गईं।

सूचना मिलते ही मृतकों के परिजन भी अस्पताल पहुंचे। मामा-भांजे की असमय मौत की खबर सुनते ही परिवार में कोहराम मच गया। मां-बाप और अन्य परिजन बदहवास हालत में रोते-बिलखते नजर आए। गांव में जैसे ही यह खबर पहुंची, पूरे इलाके में शोक की लहर दौड़ गई। जिन युवकों को लोग मेहनती, मिलनसार और जिम्मेदार मानते थे, उनके अचानक चले जाने पर हर कोई स्तब्ध रह गया।

पुलिस ने घटनास्थल के आसपास जांच शुरू की तो कुछ दूरी पर ट्रक लावारिस हालत में खड़ा मिला। माना जा रहा है कि हादसे के बाद चालक ट्रक छोड़कर फरार हो गया। स्वरूप नगर थाना प्रभारी देवेंद्र सिंह ने बताया कि ट्रक को कब्जे में ले लिया गया है और चालक की तलाश के लिए टीमें गठित की गई हैं। आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली जा रही है, ताकि आरोपी चालक की पहचान कर उसे जल्द से जल्द गिरफ्तार किया जा सके। शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है और मामले में आवश्यक कानूनी कार्रवाई की जा रही है।

इस हादसे ने एक बार फिर शहर में तेज रफ्तार और भारी वाहनों की लापरवाही से होने वाले हादसों पर सवाल खड़े कर दिए हैं। जीटी रोड जैसे व्यस्त मार्ग पर रात के समय भारी वाहनों की तेज रफ्तार अक्सर जानलेवा साबित होती रही है। स्थानीय लोगों का कहना है कि यदि समय रहते ट्रैफिक नियमों का सख्ती से पालन कराया जाए और ऐसे चालकों पर कड़ी कार्रवाई हो, तो कई जिंदगियां बचाई जा सकती हैं। परिवार का कहना है कि शिवम और शिवाकांत दोनों ही अपने छोटे से व्यवसाय को आगे बढ़ाने के सपने देख रहे थे। नए साल से उन्हें बेहतर कारोबार की उम्मीद थी, लेकिन नियति ने उन्हें वह मौका ही नहीं दिया। एक मेहनती युवक और उसके सहारे बने मामा की मौत ने पूरे परिवार को आर्थिक और मानसिक दोनों रूप से तोड़ दिया है।

नववर्ष की दस्तक के साथ जहां एक ओर लोग खुशियों और नई उम्मीदों के साथ जश्न मना रहे थे, वहीं इस परिवार के लिए नया साल गहरे दर्द और कभी न भरने वाले जख्म लेकर आया। यह हादसा सिर्फ दो जिंदगियों का अंत नहीं, बल्कि उन सपनों और उम्मीदों का भी अंत है, जो मेहनत

रिश्तों की मर्यादा को कुचलती साजिश, पत्नी ने भांजे संग मिलकर पति की ली जान

(जीएनएस)। महोबा। उत्तर प्रदेश के महोबा जिले में सामने आया यह हत्याकांड न सिर्फ कानून बल्कि रिश्तों और भरोसे की बुनियाद को भी झकझोर देने वाला है। करबई थाना क्षेत्र में एक महिला ने अपने ही पति को मौत के घाट उतारने के लिए ऐसी साजिश रची, जिसने हर किसी को हैरान कर दिया। इस साजिश में उसका साथ देने वाला कोई बाहरी नहीं, बल्कि उसका अपना भांजा था, जिससे उसके प्रेम संबंध थे। पुलिस ने पूरे मामले का खुलासा करते हुए दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। मामले की शुरुआत 11 दिसंबर को हुई थी, जब गंगामाई पहाड़ के पास 45 वर्षीय माली श्याम सुंदर का शव संदिग्ध परिस्थितियों में बरामद हुआ। पहाड़ी इलाके में शव मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई थी। शुरुआती तौर पर मामला दुर्घटना या गिरने से मौत का लग रहा था, लेकिन शरीर पर चोटों के निशान और घटनास्थल की स्थिति ने पुलिस को हत्या की आशंका की ओर मोड़ दिया। इसके बाद पुलिस ने हर पहलू से जांच शुरू की और मृतक के परिजनों से गहन पूछताछ की।

जांच आगे बढ़ी तो जो सच्चाई सामने आई, उसने सभी को चौंका दिया। पुलिस

के अनुसार, श्याम सुंदर की पत्नी गोमती का अपने भांजे सुजीत कुमार उर्फ लालू सैनी, निवासी जसपुरा (बांदा), से लंबे समय से प्रेम संबंध था। दोनों एक-दूसरे से शादी करना चाहते थे, लेकिन श्याम सुंदर इस रिश्ते में सबसे बड़ी बाधा था। पति की मौजूदगी उनके भविष्य की राह में दीवार बन रही थी और इसी वजह से उसे रास्ते से हटाने की साजिश रची गई। पुलिस जांच में सामने आया कि 10 दिसंबर को पूर्व नियोजित योजना के तहत गोमती और सुजीत ने श्याम सुंदर की हत्या कर दी। हत्या के बाद शव को गंगामाई पहाड़ के पास फेंक दिया गया, ताकि यह हादसा या दुर्घटना लगे और किसी को शक न हो। आरोपियों को भरोसा था कि पहाड़ी इलाका होने के कारण मामला उलझ जाएगा और सच्चाई सामने नहीं आएगी।

हालांकि, इस पूरे घटनाक्रम में एक अहम मोड़ तब आया जब मृतक का बेटा कृष्ण कुमार अपने पिता की मौत को लेकर संतुष्ट नहीं हुआ। उसे लगातार यह महसूस हो रहा था कि इस घटना के पीछे कोई गहरी साजिश है। उसने अपनी मां पर भरोसा जताते हुए उससे बातचीत शुरू की और भावनात्मक रूप से सच जानने की कोशिश की। इसी दौरान गोमती का आत्मसंयम टूट गया और उसने अपने बेटे के सामने ही हत्या की पूरी कहानी स्वीकार कर ली। बेटे ने यह जानकारी तुरंत पुलिस तक पहुंचाई, जिसके बाद जांच की दिशा पूरी तरह बदल गई।

करबई थाना प्रभारी सत्वेंद्र सिंह भदौरिया ने बताया कि आरोपी महिला और उसके भांजे को गिरफ्तार कर लिया गया है। पूछताछ के दौरान दोनों ने अपना जुर्म कबूल किया है। उनकी निशानदेही पर हत्या में प्रयुक्त धारदार हथियार और ईंट भी बरामद कर ली गई है, जिनसे श्याम सुंदर पर जानलेवा हमला किया गया था। पुलिस ने दोनों आरोपियों के खिलाफ सुसंगत धाराओं में मुकदमा दर्ज कर उन्हें न्यायिक हिरासत में जेल भेजने की प्रक्रिया शुरू कर दी है।

यह मामला इलाके में चर्चा का विषय बना हुआ है। लोग हैरान हैं कि कैसे एक पत्नी ने अपने ही पति को मारने की साजिश रची और उसमें अपने भांजे को शामिल किया। गांव और आसपास के क्षेत्र में इस घटना को लेकर गहरा आक्रोश और दुख दोनों देखने को मिल रहा है। पुलिस का कहना है कि यह अपराध न केवल कानून का उल्लंघन है, बल्कि पारिवारिक विश्वास और सामाजिक मूल्यों पर भी करारा प्रहार है। मामले से जुड़े सभी पहलुओं की गहनता से जांच की जा रही है, ताकि किसी भी तथ्य को नजरअंदाज न किया जाए।

इस हत्याकांड ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि जब रिश्ते ही भरोसे को तोड़ दें, तो इंसान किस पर विश्वास करे। महोबा की यह घटना आने वाले समय तक लोगों के लिए एक भयावह और शर्मनाक उदाहरण के रूप में याद की जाती रहेगी।

सोना वायदा में 114 रुपये, चांदी वायदा में 73 रुपये और क्रूड ऑयल वायदा में 1 रुपये की नरमी

(जीएनएस)। मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 64514.58 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 15797.56 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 48715.97 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का जनवरी वायदा 34870 पॉइंट के स्तर पर बंद हुआ। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 1094.51 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 12033.75 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना फरवरी वायदा 135299 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 135890 रुपये और नीचे में 135080 रुपये पर पहुंचकर, 135804 रुपये के पिछले बंद के सामने 114 रुपये या 0.08 फीसदी औंधकर 135690 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया। गोल्ड-गिनी जनवरी वायदा 14 रुपये या 0.01 फीसदी की बढ़त के साथ 111950 रुपये प्रति 8 ग्राम के भाव पर बंद हुआ। गोल्ड-पेटल जनवरी वायदा 2 रुपये या 0.01 फीसदी की गिरावट के साथ 13942 रुपये प्रति 1 ग्राम के भाव पर बंद हुआ। सोना-मिनी फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 135687 रुपये के भाव पर खूलकर, 135850 रुपये के दिन के उच्च और 135001 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 71 रुपये या 0.05 फीसदी की गिरावट के साथ 135700 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर बंद हुआ। गोल्ड-टेन जनवरी वायदा प्रति 10 ग्राम सत्र के आरंभ में 136411 रुपये के भाव पर खूलकर, 136886 रुपये के दिन के उच्च और 136140 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 136697 रुपये के पिछले बंद के सामने 43 रुपये या 0.03 फीसदी की बढ़त के साथ 136740 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर बंद हुआ।

चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा 235998 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 238911 रुपये और नीचे में 233850 रुपये पर पहुंचकर, 235873 रुपये के पिछले बंद के सामने 73 रुपये या 0.03 फीसदी गिरकर 235800 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा चांदी-मिनी फरवरी वायदा 206 रुपये या 0.09 फीसदी औंधकर 237792 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा 129 रुपये या 0.05 फीसदी गिरकर 237881 रुपये प्रति

▸▸ कमोडिटी वायदाओं में 15797.56 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 48715.97 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 12033.75 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 34870 पॉइंट के स्तर पर

किलो हुआ।

मेटल वर्ग में 1789.87 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा जनवरी वायदा 1.5 रुपये या 0.12 फीसदी घटकर 1291 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। जबकि जस्ता जनवरी वायदा 10 पैसे या 0.03 फीसदी के सुधार के साथ 308.15 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। इसके सामने एल्यूमीनियम जनवरी वायदा 10 पैसे या 0.03 फीसदी की बढ़ोतरी के साथ 297.4 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा जनवरी वायदा 5 पैसे या 0.03 फीसदी की नरमी के साथ 182.7 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 1963.11 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल जनवरी वायदा सत्र के आरंभ में 5203 रुपये के भाव पर खूलकर, 5230 रुपये के दिन के उच्च और 5202 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 1 रुपये या 0.02 फीसदी की गिरावट के साथ 5222 रुपये प्रति बैरल के भाव पर बंद हुआ। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी जनवरी वायदा 1 रुपये या 0.02 फीसदी औंधकर 5222 रुपये प्रति बैरल पर आ गया। इनके अलावा नैचुरल गैस जनवरी वायदा 3 3 3 . 2 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 335.6 रुपये और नीचे में 317.1 रुपये पर पहुंचकर, 329.5 रुपये के पिछले बंद के सामने बिना बदलाव के 329.5 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर पहुंचा। जबकि नैचुरल गैस-मिनी जनवरी वायदा 20 पैसे या 0.06 फीसदी की नरमी के साथ 329.6 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर बंद हुआ।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल जनवरी वायदा सत्र के आरंभ में 1020 रुपये के भाव पर खूलकर, 2.9 रुपये या 0.29 फीसदी लुढ़ककर 1005.2 रुपये प्रति किलो बोला गया।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 6325.94 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 5707.81 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 1543.33 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 113.15 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 4.52 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 128.88 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 176.05 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 1775.34 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 19019 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 88143 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 27538 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 415614 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 47090 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 17188 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 40887 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 104547 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 20739 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 39562 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स जनवरी वायदा सत्र के आरंभ में 34801 पॉइंट पर खूलकर, 34899 के उच्च और 34765 के नीचले स्तर को छूकर, 19 पॉइंट बढ़कर 34870 पॉइंट के स्तर पर बंद हुआ।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल जनवरी 5200 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 1.9 रुपये की गिरावट के साथ 134.4 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस जनवरी 330 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 15 पैसे की नरमी के साथ 25.15 रुपये हुआ।

सोना जनवरी 140000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 12.5 रुपये की गिरावट के साथ 1508 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी जनवरी 260000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 8.5 रुपये की बढ़त के साथ 7800 रुपये हुआ। तांबा जनवरी 1300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 19 पैसे के सुधार के साथ 72 रुपये हुआ। जस्ता जनवरी 320 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 42 पैसे की नरमी के साथ 8.4 रुपये हुआ।

पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल जनवरी 5200 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 50 पैसे के सुधार के साथ 118.3 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस जनवरी 330 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 25 पैसे की नरमी के साथ 25.5 रुपये हुआ।

सोना जनवरी 125000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 6 रुपये की बढ़त के साथ 342 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी जनवरी 200000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 290.5 रुपये की गिरावट के साथ 2847.5 रुपये हुआ। तांबा जनवरी 1150 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 28 पैसे के सुधार के साथ 10.89 रुपये हुआ। जस्ता जनवरी 300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 24 पैसे की नरमी के साथ 7.79 रुपये हुआ।